~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~

मासिक वेब पत्रिका

अंक 3 सितंबर 2017

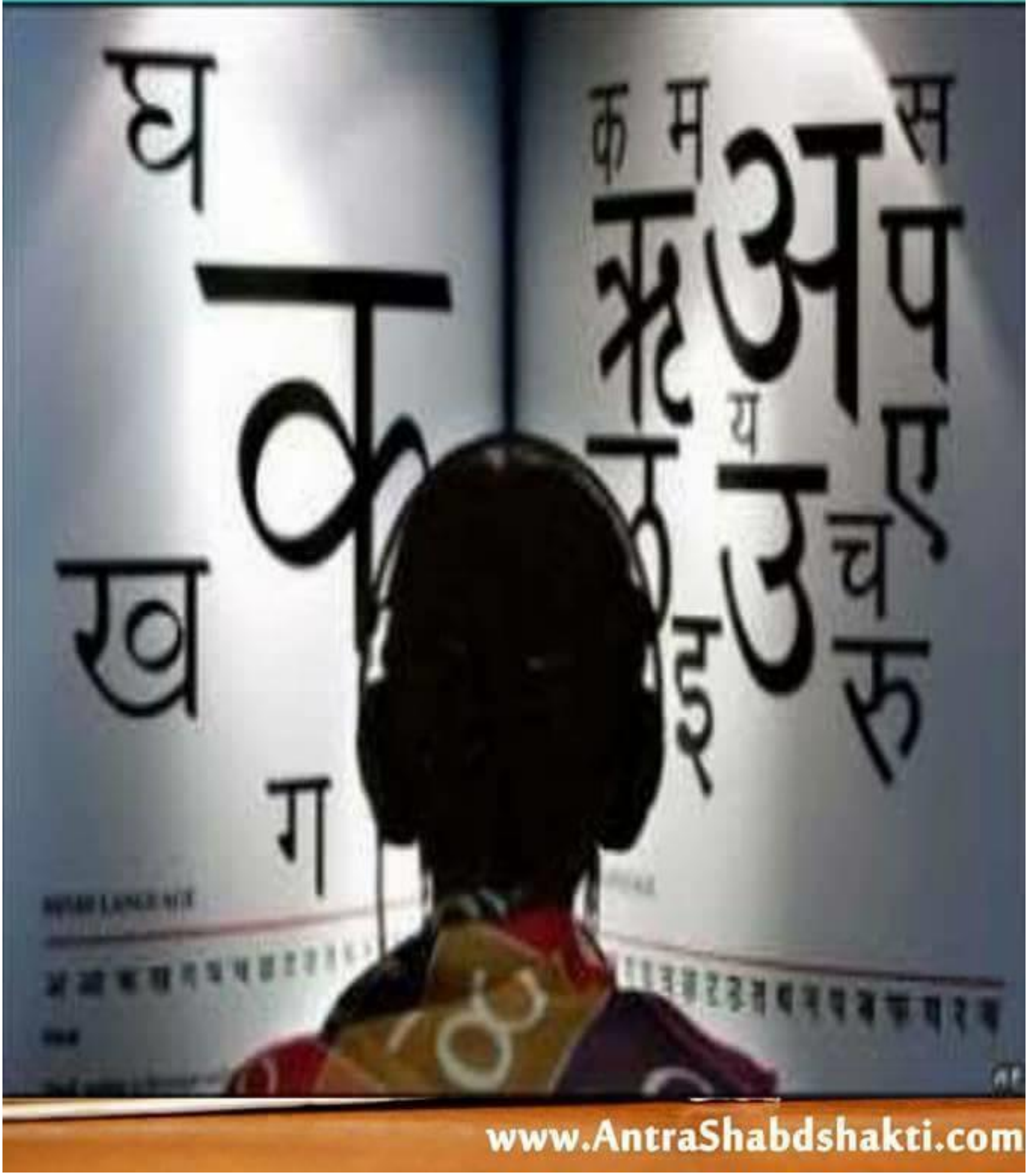

।।~अंतरा-शब्दशक्ति~।।

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

मनोज जैन

संस्थापक एवं संपादक

प्रीति समकित सुराना

सहयोगी एवं परामर्श दाता

ब्रजेश शर्मा 'विफल'

वेबसाइट

www.antrashabdshakti.com

ईमेल

antrashabdshakti@gmail.com

फेसबुक पेज

https://www.facebook.com/www.antrashabdshakti/

फेसबुक समूह

https://www.facebook.com/groups/989086901140447/

अनुक्रमणिका

संपादकीय

प्रीति समकित सुराना 5

गीत-नवगीत

ममता बाजपेई 8

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी' 9

सत्यप्रसन्न 10

मीरा भार्गव 11

कविता

राजकुमार बैरवा 'मुसाफ़िर' 12

ड़ा मीनू पाण्डेय 'नयन ' 13

अर्विना गहलोत 14

डॉ पंकज मिश्र 'निश्छल' 15

संजय वर्मा "दृष्टि 16

अपर्णा झा 17

सुधेश जैन 18

नीरजा मेहता 19

अनिता मंदिलवार "सपना" 20

जयति जैन 'शानू' 21

डॉ आरती कुमारी 22

मीनाक्षी सुकुमारन 23

शशिसिंह 24

सतेन्द्र सेन सागर 25

बलराम भगत 26

ग़ज़ल

कवि राजेश पुरोहित 27

संजय "अश्क" बालाघाटी 28

शिरीन भावसार 29

सुनीता लुल्ला 30

दोहे

मनोज जैन 'मधुर' 31

आदित्य राजौरिया "अजनबी" 32

हाइकु

कैलाश बिहारी सिंघल 33

किरण मिश्रा 34

मुक्तक

दिनेश रघुवंशी 35

बीना शर्मा "झकार" 36

ब्रजेश शर्मा "विफ़ल" 37

जयकृष्ण चांडक 38

लघुकथा

पूनम झा 39

चंचल पाहुजा 40

शब्द मसीहा 41

रुबी प्रसाद 42

रिपोर्ट

भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार पर रिपोर्ट
-कंचन अपराजिता 43-47

आलेख

"गाय को सूअरों की की तरह मत पालो"
-चौ.मदन मोहन समर 48-49

भारतीय चिंतन में हिंदी का विकास
-डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई 50-55

बलात्कार कायरतापूर्ण
घृणितसोच/बीमारी
-आलोक कुमार सिंगरौल 56-57

संस्मरण

सफ़र जो ठहर गया स्मृतियों में
- पवन अरोड़ा 58-71

पुस्तक समीक्षा

'आसमानी आँखों का मौसम'
समीक्षक : मुकेश दुबे 72-75

'मालिश महापुराण'
समीक्षक : देवेन्द्र सोनी 76-77

साक्षात्कार

अवधेश कुमार 'अवध'
प्रस्तुतकर्ता-पिंकी परुथी 'अनामिका' 78-80

बाल कविता

राजेन्द्र श्रीवास्तव 81
मुकेश कुमार ऋषि वर्मा 82

।।~अंतरा-शब्दशक्ति~।।
मासिक वेब पत्रिका
हिंदी सेवा के उद्देश्य से
प्रकाशन हेतु सभी विधाओं में
रचनाएं मौलिकता स्वीकृति
एवं छायाचित्र सहित ईमेल द्वारा
आमंत्रित हैं।
जिन्हें संपादक मंडल द्वारा
चयन कर
प्रकाशित किया जाएगा।
antrashabdshakti@gmail.com

संपादकीय

'मौन की भाषा'

मातृभाषा हिंदी ग्राह्य भी है और सम्माननीय भी पर जब बात भाषा की हो और भाषा विवादों में तब एक बात सहसा चिंतन में आती है, क्या मौन भी एक भाषा है? क्या मौन की भाषा का कोई महत्व है। विचारणीय ये है कि मौन:- समस्या या समाधान??

मौन क्या है?

एक कठिन साधना, शक्ति, भक्ति और स्वाध्याय।

विवादों को विकृत और स्थगित करने का केवल एक तात्कालिक विकल्प या समाधान।

कठिन परिस्थितियों में पलायन रूपी दुर्बलता या समस्या।

प्रेम में स्वीकृति और विषमता में विवशता।

अज्ञानियों की ताकत और ज्ञानियों का विवेक।

भावनात्मक पहलुओं में संवेदनहीनता का प्रतीक।

वैसे मेरे लिए मौन पर लिखना बहुत कठिन लगता होगा क्योंकि *वाचाल / बातूनी वाली छवि से परे अंतस का मौन किसने देखा??*

जैसा कि मैं हर बार अपनी बात रखने से पहले ही *क्षमायाचना* कर लेती हूं कि ये सिर्फ मेरी सोच की *अभिव्यक्ति* है। तन, मन, धन और जन का प्रभाव परिस्थितियों पर और परिस्थितियों का प्रभाव विचारों पर होता है। सबकी परिस्थितियां अलग होती है अतः मेरी बातों से सबकी सहमति अनिवार्य नही। मैं अपनी बात उपरोक्त बिंदुओं पर केंद्रित करूँगी।

मौन मेरे लिए एक *कठिन साधना* है क्योंकि बातूनी हूँ, भावुक हूँ, संवेदनशील हूँ।

मौन मेरे लिए वो *शक्ति* है जिससे मैं परिस्थितियों का सामना करने के लिए खुद को तैयार करती हूं अपना मनोबल संचित करती हूं।

मौन मेरे लिए *भक्ति* या अपने इष्ट या आराध्य से सीधे संवाद का *अवसर* है।

मौन मेरे लिए वो *कालखंड* है जिसमें दूसरों से खुद को अलग रखकर स्वाध्याय, आत्मचिंतन, आत्मावलोकन कर सकूं। चिंता और चिंतन दोनों ही इस मौन काल मे मनमस्तिष्क को सक्रिय रखता है। जिसका प्रभाव जीवन में सकारात्मक या नकारात्मक पड़ता जरूर है।
मैने जिम्मदारियों से भागना सीखा नही।
सही को सही साबित करने तक बहस पर आमादा रहती हूं।
गलत होने पर क्षमायाचना तक तत्पर रहती हूं।
जिम्मेदारियों के लिए जवाबदेही अपना कर्तव्य मानती हूं।
लेकिन इनमे से कोई भी कार्य मेरे लिए मौन रहकर संभव नहीं। कई बार मुझे सलाह मिलती है चुप रहकर भी विरोध किया जा सकता है। मौन रहकर भी जिम्मेदारियों का निर्वाह किया जा सकता है। पर मेरी वाचालता ऐसे में कठिनाई बन जाती है इसलिए मुझे लगता है मौन बहुत कठिन है।
कई बार मौन हो जाना तात्कालिक विवादों से बचने का एकमात्र *विकल्प* या *उपाय* हो जाता है क्योंकि कोई बात अति प्रतिक्रिया से बिगड़ जाए, गुस्से में कही बात मान-सम्मान और रिश्तों को क्षतविक्षत कर दे उससे बेहतर *समाधान* होता है उस वक्त चुप हो जाना और सोचना की इस समस्या से कैसे बाहर आए।
दो लोगों के बीच संवादहीनता हमेशा ग्रंथियों को जन्म देती है क्योंकि हम एक दूसरे के मन की जाने बिना अपनी ही सोच से ताने बाने बुनने लगते हैं और इससे मन मुटाव या दूरियां बढ़ती बढ़ती है। तुरंत में झगड़े से बचने के लिए चुप हो जाना अलग बात है पर समस्या तब होती है जब बातचीत करके मसले को सुलझाने या समझने समझाने की बजाय मौन या संवादहीनता कायम रहे।
ऐसे में रिश्ता घुट घुट कर दम तोड़ देता है या विकृत रूप ले लेता है। इसलिए बेहतर है बात हो। भले ही लड़कर झगड़कर लेकिन मन की बातों का सम्प्रेषण हो और मौन को *आवरण* बनाकर परिस्थितियों को बिगाड़ने की बजाय विवाद का सामना करके रिश्तों को बचाया जाए।
कई बार मैंने महसूस किया है हम अपनी गलती होने पर सवालों के जवाब से बचने के लिए मौन धर लेते हैं पर क्या ये सही है कि जिन बातों के लिए हम जिम्मेदार हैं उन बातों और हालातों में जवाबदेही से *पलायन* का या अपनी *दुर्बलता* का आवरण मौन को बना लें। क्या ये मौन हमारे मन को भी चुप करा देगा?
प्रेम में मौन की *स्वीकृति* गुदगुदाती है पर अपनो का रूठने पर बिना मनाए मौन हो जाना तकलीफ देता है।
कई बार अपनो को तकलीफ न हो इसलिए भी मौन *विवशता* बन जाता है और इस मौन में हम अपना दर्द छुपा लेते हैं। अपनी *बकबक के पीछे कोई दर्द मौन ओढ़े टीसता रहता है* मन बहुत उद्‌द्वेलित होता है और वो बेचैनी बहुत पीड़ादायक होती है जब *अंतस की बातों पर मौन का पहरा* हो। पर हमें अपने मनोबल को समेटना होता है दोहरी भूमिका में कि अपना दर्द भी सह सकें और हंस कर चुप भी सकें। सच बहुत मुश्किल होता हैं बोलकर भी चुप रहना।

कहा जाता है *अज्ञानी का बल मौन* क्योंकि बोलकर अज्ञानता का प्रदर्शन करने से अच्छा है चुप रहना। और *ज्ञानी का विवेक* है मौन क्योंकि *कब क्या कैसे किससे कितना बोलना शेष मौन रहना* ये समझदारों का ही सामर्थ्य है।
प्रेम में भावों की अभिव्यक्ति सुखद अनुभूति दे सकती है तब मौन *संवेदनहीनता का प्रतीक* है। प्रेम की स्वीकारोक्ति, किसी अपने की परवाह और दर्द में साथ होने को शब्दों में महसूस करवाना बहुत मायने रखता है। किसी अपने के साथ *मैं हूं 'ना'* की तरह मौन रहने की बजाय *"मैं हूं ना"* कहकर देखिए मेरे लिए मौन से ज्यादा ताज़गी जरा से संवाद से महसूस होगी।

***रे मन**!!!*
***मौन को आवरण बना कर**, **यूँ रिश्तों को नीरस न कर**,*
***लड़-झगड़**, **जान-समझ**, **रिश्तों को जी ले जी भर कर**,*
***दर्द किसे नही है दुनिया में**, **बांट जरा बैठकर अपनों के साथ**,*
मौन को अपना समर्पण बना**, **अहं बनाने की गलती न कर।

प्रीति सुराना

गीत-नवगीत

ममता बाजपेई

फिर कई अनुबंध टूटे
फिर चुनौती
मिल गई
बेड़ियों में पैर कस कर
बोलता है
वो चलो
छोड़ कर आकार अपना
एक सांचे
में ढलो
साँस पर प्रतिबन्ध की
मानो बपौती
मिल गई
फिर गिरीं खुशियाँ फिसल कर
साँप सीढ़ी
की तरह
फिर समय ऊँगली दिखा कर
कर रहा
तीखी जिरह
जीभ को आरोप की पैनी
सरौती मिल गई
जिंदगी शतरंज जैसी
गोटियाँ
अभिमान है
चाल चलतीं वांछनाएं
दाँव पर
सम्मान है
स्वार्थ के भगवान् को
पूजा चढ़ौती
मिल गई

ममता बाजपेई

गीत-नवगीत

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

झोंपड़ी के पास से

गाँव की यह
सड़क कच्ची
उठ शहर को जा रही है

मेंड़ जाकर
मिल रही है
मोड़ से पगडण्डियों से
फसल मिलने
जा रही है
सब्जियों से मण्डियों से
रोकती है
बाड़ लेकिन
गाय चारा खा रही है

करज का है
बहा नाला
झोंपड़ी के पास से कुछ
हो चुकी है
रख सुनिश्चित
घूस के इतिहास से कुछ
गुजरती है
जो हवा वह
कुछ नहीं कर पा रही है

हल नहीं कुछ
कह रहा है
कुरसियों से गालियों से
पास बैठी
चौकियों से
भीड़ से या तालियों से
बॉस के सिर
बैठ बुलबुल
चोंच बस खुजला रही है

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

गीत-नवगीत

“सत्यप्रसन्न”

किश्तों में ही मिली जीत है

किश्तों में ही मिली जीत है,
एकमुश्त तो मात मिली है।

जब भी आंख खुली तो पाय़ा,
वो ही रात वही अँधियारा।
किसके प्यासे कंठ पी गये
अग-जग का सारा उजियारा।
थर-थर काँप रहा घर शायद
लगता है बुनियाद हिली है।
किश्तों में ही मिली जीत है
एकमुश्त तो मात मिली है।

सच पूछो तो सपने में ही
हर खोये को हमने पाया।
वर्ना छलता रहा जागरण
हर चाहत ने खूब सताया।
हमने फटी टाट पे अपनी
मखमल की पैबंद सिली है
किश्तों में ही मिली जीत है
एकमुश्त तो मात मिली है।

देखो अब तक बाँच रहे हैं
हम औरों की गल्प कथायें।
अपने सीने में दफ़नाकर,
अपनी पीड़ा और व्यथायें।
बरबस काँटों को अपनया,
फूलों से तो खाल छिली है
किश्तों में ही मिली जीत है
एकमुश्त तो मात मिली है।

चारों ओर लगे हैं अपने
उलझे प्रश्नों के ही घेरे।
हम ही अब तक ना हो पाये
समाधान के कुशल चितेरे।
*सुख*की गांठ लगी गठरी तो
हमसे अब तक खुली नहीं है।
किश्तों में ही मिली जीत है
एकमुश्त तो मात मिली है।

“सत्यप्रसन्न”

गीत-नवगीत

मीरा भार्गव

पतित पावनी गंगा मैय्या ।
पार लगाती सबकी नैय्या

भेद भाव ना मन में लाती
सबको अपने गले लगाती
माँ जैसे सबको अपनाती
कल कल छल छल बहती मैय्या ।
पतित पावनी गंगा मैय्या ।
पार लगाती सबकी नैय्या ।

नीच अधम पापी हो कितना
करती नही किसी से घिरना
पिलाती उसको अमृत अपना
प्यार सभी से करती मैय्या ।
.

पतित पावनी गंगा मैय्या ।
पार लगाती सबकी नैय्या ।

जलचर वनचर सबको पाले
भर भर देती सबको प्याले
मईया तेरे रूप निराले
सबकी पालनहारी मैय्या ।
शिवशंकर के शीश विराजे ।
ऋषि मुनियों के मन अति भावे ।
सुर नर मुनि सब जन यश गावें
ममता की मूरत है मैय्या ।
मीरा भार्गव ....

कविता

राजकुमार बैरवा 'मुसाफ़िर'

बचपन और जवानी..!!

बचपन से जवानी तक का ये सफ़र,
यूँ तो बहुत सच्चा था,
मगर जाने क्यों ,
इस जवानी से अच्छा तो वो बचपन था,

वैसे काफी कुछ तो हैं आज मेरे पास,
पेट भर खाना और जेब मे पैसे हज़ार,
न कोई खेलने से रोकता हैं,
ना कोई बिन बात ही टोकता हैं,

फिर भी जाने क्यों मन अब,
इस आज़ादी में भी, घुटता रहता हैं,
इस जवानी से अच्छा तो वो बचपन था,

बचपन मे खाना वक़्त का नहीं,
वक़्त खाने का गुलाम था,
ना वजन की चिंता होती थी,
ना बर्गर पिज़्ज़ा बुलाता था,

अब तो जैसे खाना बस एक काम हो गया हैं,
फ़ास्ट फ़ूड को खाना समझना बहुत आम हो गया हैं,
बचपन से जवानी तक का ये सफ़र,
यूँ तो बहुत सच्चा था मगर जाने क्यों ,

इस जवानी से अच्छा तो वो बचपन था,

बचपन से जवानी तक का ये सफ़र,
यूँ तो बहुत सच्चा था मगर जाने क्यों ,
इस जवानी से अच्छा तो वो बचपन था,

टाइम टेबल की ज़िंदगी हैं अब,
जैसे बचपन मे स्कूल थे,
आज बड़े ही कूल हैं बनते,
पर बचपन मे बहुत फूल थे,

उसी बचपन की फूलनेस्स के आगे,
आज की ये कुलनेस्स बिल्कुल बेकार हैं,
बचपन से जवानी तक का ये सफ़र,
यूँ तो बहुत सच्चा था, मगर जाने क्यों ,

बचपन जवानी की चाहत में,उस वक़्त बहुत झूठा सा लगता था,

जवानी बहुत शानदार होगी,
बेवकूफ दिल यही सोच करता था,
आज यहाँ पहुँचे तो जाना,
आज से तो अपना कल अच्छा था,

बचपन से जवानी तक का ये सफ़र,
यूँ तो बहुत सच्चा था,
मगर जाने क्यों ,
इस जवानी से अच्छा तो वो बचपन था...!!

राजकुमार बैरवा 'मुसाफ़िर'   जोधपुर (राज.)

कविता

ड़ा मीनू पाण्डेय 'नयन '

अविश्वास

तुम नही जानते एक के बाद एक जब
झूठ की पर्तें खुलती जाती है न
तो वो बहुत दुख देती है ।
आपके विश्वास करने की वजह
ही छीन लेती है ।
और फिर से शुरू हो जाता
आत्ममंथन ।
फिर अतीत की गहराईयां
नये नये जख्मों को
फिर उधेड़ देती है ।
तुम नही जान सकते कि
सच और झूठ के बीच
बहुत महीन सी दीवार होती है ।
और शायद इसी महीन दीवार पर
टिका होता है एक
पवित्र रिश्ता ।
और रिश्ते की बुनियाद ।
और जैसे ये हिलती है ।
बार बार कानों में गूंजती है आवाजें ।
चीखते है वो पल ।
जो जीने की और एतबार की
वजह बने थे कल ।
और फिर धराशायी होने लगती
वो इमारत ।
जिसकी नीव को तुम्हारे
रोज-रोज बोलने बाले झूठ
पहले ही हिला चुके होते है ।
पर अफसोस तुम्हें कोई फर्क
नही पढता ।
क्योंकि तुमको तो हमेशा
यही सिखाया गया है ।
कि सफल व्यक्ति वही है
जो खुद कभी उल्लू न बने ।
जितना मन करे दूसरों को बनाये ।
पर प्रिये तुम फिर भूल गए ।
वो जुमला दूसरों के लिए था ।
पर तुम्हारे द्वारा तो
अपनों पर भी बार- बार अपनाया गया है ।
अब तुम्हें कौन समझाये कि
अपने अपने होते हैं ।
और पराये पराये ।

@ ड़ा मीनू पाण्डेय 'नयन '
भोपाल (मप्र)

कविता

अर्विना गहलोत

*** मैं हिन्दी हूँ***

कवि की कल्पना मैं हूँ।
कबीर ने मुझे चाहा,रहीम ने मुझे पोसा ।

मैं खुसरो की पहेली मैं , सूर के पदों में हूँ।
गिरधर की कुण्डली में, अलंकारो में बसती हूँ
,उपमाओ से सजती हूँ।

मैं हिन्दी हूँ।

तुलसी के दोहो में छन्दो में ,चौपाई में मेरा
स्थान है ऊँचा।
मैं रसखान की भाषा में झलकती हूँ,महादेवी की
कविता में।

निराला के साहित्य में छलकती हूँ,।
परसाई के व्यंगो में,हँसी बन कर खनकती हूँ।

मैं हिन्दी हूँ

हरिवंश की मधुशाला में,गुप्त कीपंचवटी में मैं
हूँ।
प्रेमचंद के उपन्यास के पात्रो में जीवन्त हूँ।

व्यंजनो की व्यंजना में,विषेशण की विशेषता
में।
मैं सजती हूँ संवरती हूँ ,मैं गद्यों में मैं पद्यों
समाचारों में।

मैं हिन्दी हूँ

मैं ईश्वर की कृपा में,सरगम के सात स्वरो में
हूँ।
 गजलो में ,मैं भजनो में राष्ट्र के गान में मैं हूँ।

मैं हिन्दी हूँ।

अर्विना गहलोत

कविता

डॉ पंकज मिश्र 'निश्छल'

कविता

कविता न कोई है हुनर , न कला
दिल के भीतर यह रहती है . . .
जब हिय में होता घाव कोई
उससे होकर यह बहती है . . .

ना इसका मूल्य कोई प्यारे
न इसका कोई मूल्यांकन
इसमें है किंचित मर्म सहित
तेरे अतीत का छायाँकन

कितना भी दृढ़ हो बाह्य कवच _
यह अंतर्मन को विँधती है . . .
जब हिय में होता घाव कोई,
उससे होकर यह बहती है

कवि को मिलता उपहास सदा_ _
वह ही उसकी संपत्ति सही
फिर भी न कोई शिकवा जग से_ _
अर्जी बस उसकी यह ही रही,

के समझो तुम कविता पे नहीं _
कविता तुम पर ही हँसती है . .
जब हिय में होता घाव कोई,
उससे होकर यह बहती है . . . .

डॉ पंकज मिश्र 'निश्छल'
रीवा मध्य प्रदेश

कविता

संजय वर्मा "दृष्टि

संकल्प

अंग्रेजी के शब्दों से हो रहा
हिंदी के इंद्रधनुष सी
साहित्य शाला का रंग फीका
मानव देख रहा धुंधलाई आँखों से
और व्यथित मन सोच रहा
लिखने /पढ़ने में क्यों ?बढ़ने लगे
हिंदी में अंग्रेजी के मिलावट के खेमे
शायद ,मिलावट के प्रदूषण ने
हिंदी को बंधक बना रखा हो
तभी तो हिंदी सिसक -सिसक कर
हिंदी शब्दों की जगह
गिराने लगी लिखने /पढ़ने /बोलने में
तेजाबी अंग्रेजी आँसू
साहित्य से उत्पन्न मानव अभिलाषा
मर चुकी है अंग्रेजी के वायरस से
कुछ बची वो स्वच्छ ओंस सी बैठी है
हिंदी
विद्वानो की जुबां पर
सोच रही है आने वाले कल का
हिंदी लिखने /पढ़ने/बोलने से ही तो कल है
हिंदी से ही मीठी जुबां का हरएक पल है
संकल्प लेना होगा - हिंदी लिखने /पढ़ने/बोलने
का आज
हिंदी को बचाने का होगा ये ही एक राज

संजय वर्मा "दृष्टि "125
शहीद भगतसिंह मार्ग
मनावर जिला धार म प्र

कविता

अपर्णा झा

"पति-पत्नी"

मैं और तुम
और फिर हमारे बच्चे
एक संसार बन गए,
और फिर सभ्यता और संस्कृति
के मिसाल बन गए
मिसाल बन इतिहास के पन्नो में
एक अध्याय बन गए
मैं और तुम
कितना छोटा सा लगता
ये शब्द जाल
पर कितना गहरा ये माया जाल
मोह से घिरे
टूटने-बिखरने से डरे-डरे
मैं और तुम
चिर शाश्वत,निरंतर
प्रेम की परिभाषा
प्रेम की पराकाष्ठा
प्रेम अपरिमित
प्रेम सेवा
प्रेम त्याग
प्रेम निर्णय बेमिसाल
प्रेम आयोजन
प्रेम समायोजन
प्रेम त्योहार
मैं और तुम
हाँ मैं और तुम का जुड़ना
कितने रहस्यों से मिलना
रहस्यों में बंधना
रहस्यों में उलझना
रहस्यों से सुलझना
और फिर
एक रहस्य बन
ब्रह्मांड की उत्पत्ति में
हो सहायक
कितने और रहस्यों की
उत्पत्ति एवं उद्गार का
बन कारण
यूँ ही चल रहा
चिर-निरंतर हो शाश्वत
बन प्रकृति की एक उपमा
प्रकृति की ही महिमा
प्रकृति की गोद मे
एक जीवन ,एक संसार को लिये
जिये जा रहे
मैं और तुम
हाँ, में और तुम.

@अपर्णा झा.
फरीदाबाद, हरियाणा.

कविता

सुधेश जैन

सद्भाव

केरल से करगिल घाटी तक,
एक हिंदू-मुसलमान हो।
गोहाटी से चौपाटी तक,
सदभाव हमारी पहचान हो।।

ईदी-दीवाली हो अदला-बदली,
त्यौहार हमारी शान हो।
बँटे सिवँय्या भंडारे में,
शाकाहारी रमजान हो ।।

स़ब्बेरात या माँ जगराता,
सबका ही सम्मान हो।
परंपरा की इस परिपाटी का,
मिलजुलकर उत्थान हो।।

निकले सत्यवचन ही मुख से,
मुसलल्ल मेरा ईमान हो।
झुके माथा, हो मन में श्रद्धा,
गीता हो या कुरान हो।।

ताजियों के नारे से
अलाव के छाले तक।
सुर से सुर मिले जन-जन का,
शंखनाद हो या अजा़न हो।।

हज धवल या धाम गेरूआ,
कर्म सबके महान हो।
पाक़ कैकशा से हों ,
या फिर सूर्य स्नान हो।।

तिलक-टोपी वा धोती-कुरता,
भले बिंदी-बुर्का पहचान हो।
परिधानो से पहले सबके,
दिल में हिन्दुस्तान हो ।।

सुधेश जैन
B-13, नक्षत्र अपार्टमेण्ट,
महरौली, नई दिल्ली-110030.

कविता

नीरजा मेहता

"हिन्दी बहती नीर सी"

मधुर सुहानी कोमल वाणी
श्रृंगार हमारी हिन्दी है
जीवन को परिभाषित करती
पहचान हमारी हिन्दी है।

माँ के ललाट पर सजी हुई
सुंदर बिन्दी सी हिन्दी है
भारत की है प्राण साधना
पावन माटी सी हिन्दी है।

संस्कृति की ले उज्ज्वलता
उपहार हमारी हिन्दी है
नैतिक मूल्यों में रची बसी
वरदान हमारी हिन्दी है।

आशा की लौ करे प्रदीप्त
विश्वास हमारी हिन्दी है
श्वासों में नित धड़क रही
झंकार हमारी हिन्दी है।

राहों को जो करे उजागर
रवि की रश्मि सी हिन्दी है
एकता के रंगों में रंगी
तीज त्योहार सी हिन्दी है।

जन-जन के मन में समाई
फूलों सी कोमल हिन्दी है
प्रकृति में जो महक रही
पावन माटी सी हिन्दी है।

देवनागरी लिपि में टंकित
रूपसी अनुपम हिन्दी है
गीत छंद मुक्तक तुकांत
नवरस सी अप्रतिम हिन्दी है।

विद्या, कला, संस्कारों जैसी
संगम त्रिवेणी सी हिन्दी है
ये साधन है, ये साध्य भी है
ये प्रशस्त मार्ग सी हिन्दी है।

भारत को दे जो नव विहान
ये शुभ नियति सी हिन्दी है
सजी हुई जो अलंकार सी
ये बहती नीर सी हिन्दी है।

"नीरजा मेहता"

कविता

अनिता मंदिलवार "सपना"

हिन्दी है गौरव

हिन्दी है राष्ट्रभाषा है गौरव बढ़ाना
इसे जन-जन तक है हमें पहुँचाना
मंजिल मिलेगी हमें है कदम बढ़ाना
बिना रूके हमें है अब मंजिल पाना....1

संबंध आत्मीय बने, व्यवहार मानवीय हो
यादगार बनें व्यक्तित्व, हमारी पहचान हो
महत्व देकर इसे है और महान बनाना
केवल सोचना नहीं है इसे अमल में लाना......2

भाषा हो न केवल हमारी चिंतन की
भाषा हो न केवल हमारे वतन की
विश्वभाषा बने अब ये जन-जन की
इसे लक्ष्य बनाकर है सिद्धांत बनाना 3

अनिता मंदिलवार "सपना"
अंबिकापुर सरगुजा छग

कविता

जयति जैन 'शानू'

यादों के निशान

कुछ चली कुछ रुकी शायद
मुझसे कुछ कह रही थी
वो यादो की तेज़ हवा
मेरे लिये ही बह रही थी
मैं रोकती भी तो केसे उसे
वो लहर जो दिल में उठी थी
गहरी इतनी की सागर भी समा जाये
तूफ़ान ऐसा कि सब उडा ले जाये
मेरी आंखे जो अश्रू से भरी थी
बारिश के पानी सी तेज बरसी थीं
बस उज़डे गुलिस्तां के निशान बचे
जो तेज आन्धी के संग बहे थे
जो थे कल साथ आज वो हैं कहां
वह यार जो साथ रोये, साथ हंसे थे !!!

एक आम लड़की

सपने बुनती
आसमान छूने के
ग़म में मुस्कुराती
एक आम लड़की
कुछ कहती कुछ सुनती
अपनों को खुश रखती
कभी सहम जाती तेज हवाओ से
कभी तूफ़ान से जूझती
एक आम लडकी
दुनिया की भीड़ में
असहाय, लड़खडाई-सी
उठकर गिरी, आन्सू छलकाती
गिरकर उठी, ज्वाला बनती
एक आम लड़की
अमीरो जेसी शान
दौलत नहीं चाहती
थोडा प्यार थोडा सम्मान
बस अपनी पहचान चाहती
मुझ जेसी एक आम लड़की !

जयति जैन 'शानू'
(नूतन), रानीपुर झांसी उ.प्र.

डॉ आरती कुमारी

बचा लेना होगा खुद को मरने से

आज नही मर रहा है केवल एक इंसान
न ही मर रहे हैं सिर्फ बूढ़े लाचार शरीर
पर आज..
मर रही हैं उम्मीद के झिलमिलाते दीप लिये
चौखट पे जमी मां की आंखें
जो अपने बेटे के इंतेज़ार में पथरा सी गईं हैं
आज मर रही है माँ की ममता
मर रही है उसकी थपकी देतीं लोरियां,
सूख रहा है उसके आँचल का दूध
जब उसके बच्चे दूर परदेस जाकर
उसकी आवाज़ तक को सुनने से
कर देते हैं इनकार
और झटक देते हैं एक सिरे से
उसके कंपकंपाते हाथों को
जो तलाशते रहते हैं
अपने बच्चो में अपने बुढ़ापे की लाठियां..
आज मर रहा है एक पिता का धैर्य
और उसका त्याग
मर रहा है उसका आत्मविश्वास
जब उसके ही पुत्र लगा देते हैं
उसके पूरे वजूद पर एक सवालिया निशान
और देते हैं एक करारा तमाचा
उसके द्वारा दी गई परवरिश को...
आज का युवा कर रहा है प्रतिनिधित्व
उस पाश्चात्य संस्कृति का
जिसमें हमारे घर में बुज़ुर्गों के लिए
कोई एक कोना भी मयस्सर नही होता
जिस महानगरीय व्यवस्था और
मशीनी ज़िन्दगी में बोझ समझ
छोड़ दिया जाता है बेबस मां बाप को
ओल्ड ऐज होम में
घुट घुट के अंतिम सांसे गिनने को
आज मानवीय संवेदनाओं को मार
चमकता खनखनाता कलयुगी सिक्का
कर रहा है
उन सारे मूल्यों और संस्कारों पर राज
जो हमारे भरत वंश की परंपरा रही है
जिस संस्कृति में
ययाति, श्रवण और राम सरीखे पुत्र हुए
जिस संस्कृति में
बुज़ुर्गों की सेवा करना
हमारा सिर्फ कर्तव्य ही नहीं
बल्कि जिनके चरण
देवी देवताओं के चारों धाम तुल्य माने गए
आज मर रही है ..बेमौत.. वही संस्कृति
आज अपनी ही लाश ढो रही है हमारी सभ्यता
अब भी वक़्त है ..बचा लेना होगा हमें
इन मरती आत्माओं को
इन लहूलुहान होते पारिवारिक संबंधों को
बचा लेना होगा इन टूटते मानवीय रिश्तों को
बचा लेना होगा अपनी खत्म होती भारतीय
संस्कृति को
और बचा लेना होगा गर्त में जाते अपने खुद के
भविष्य को.. !!

डॉ आरती कुमारी,माड़ीपुर , मुज़फ़्फ़रपुर
बिहार 842001

कविता

मीनाक्षी सुकुमारन

यादों की चादर

एक झीनी सी
यादों की चादर सी
तन जाती है
मन के पोरों में
कभी कसक
कभी चहक
कभी हँसी
कभी पीड़ा
कभी सवाल
कभी जवाब
कभी उफान
कभी शांत
यूँ मिलेजुले भावों से
बुनी चादर
ढांप लेती है
मन के कोनों को
लड़ती झगड़ती
झूझती उभरती
हँसती रोती
गिरती संभलती
वक्त के हर वेग से
फिर भी अचल अविचल
ये झीनी सी चादर
जो ढांप लेती है
हर ज़ख्म जो देते खरोंच
मन के पोरों पर।।

....मीनाक्षी सुकुमारन

शशिसिंह

कविता

मौसमों में मिलूँगी मैं

पतझड़.... सावन.... बसंत.... बहार..
एक बरस के मौसम चार .....मौसम चार ...
आपस में ही गड्डमड्ड हो जाते हैं...
रेडियो से निकले गाने के बोल और बारिश की बौछार।
गाने के बोल से बुनने लगती हूँ जीवन के धागे को।
अरे !...इतनी जरूरी बात तो तुम्हें बताना भूल ही गयी।
हर बार मैं इंतजार करती हूँ तुम्हारा....
तुम आते हो....
मेरे सामने होते हो...
सामने होकर भी ...
कभी मुझ तक पहुँच पाते हो कभी नहीं।
ये मिलना बिछड़ना,आना जाना तो लगा ही रहता है।
यूँ तो हर बार मिल जाती हूँ तुम्हें
देहरी पर खड़ी हुई.... तुम्हारी बाट जोहती।
पर कभी ऐसा हो कि तुम आओ,
और मुझे ना पाओ,
तो निराश ना होना...
मिलने की आस ना खोना।
तुम्हे पता है ना... कि मैं जीती हूँ हर मौसम को
अपने अंदर पूरी शिद्दत से।
मुझे ढूँढने की कोशिश जरूर करना उन मौसमों में
कहीं ना कहीं तो दिख ही जाउँगी।
पतझड़ में ठूँठ बनकर तुम्हारे इंतजार में....
नहीं तो आहट पाते ही तुम्हारे आने की,
आँगन के किसी कोने में झूमकर बरसते हुये मिल जाउँगी।
बसंत की अमराइयों में,
फूलों की क्यारियों में,
दूर तक फैली हरी मखमली चादर में
तो बसती है मेरी जान।
हो सकती है मेरी मौजूदगी इन सबमें
गर तुम कर सको मेरी पहचान।
नहीं तो मुझे जरूर पा लोगे किसी बगिया में
कुलाँचे भरते किसी खरगोश या तितली के पीछे।
तब भी ना मिलूँ तो बस महसूस कर लेना मेरा अंश
दूर तक फैली हरियाली को मेरा यौवन जानकर।
तुम्हारी आस में... सुबह की घास में..
चमकती ओस की बूँदों को
मेरी आँखों की कोर से टपका खारा शबनम मानकर।
सुनो....तब भी ना दिखूँ तो....
अंबर में उस नये जा टँके तारे को लेना निहार।
जब भी मुझसे मिलना चाहो तो
उन्ही से मिल लेना बार बार।
समझ लेना कि हमारा मिलना..
समय के अगले चक्र में ही नियत है अब अगली बार।
फिर वही ......
पतझड़.... सावन..... बसंत..... बहार...

शशिसिंह, शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

कविता

सतेन्द्र सेन सागर

"पूजा"

एक रिश्ता है,,
उससे,
उससे.?
अर्थात ईश्वर से,

उस बच्चे का
जो दूर है कही,
अपनो से।

अपनी माँ से,
शब्द ! नही है ये
यह संस्कारो का
घरोंदा है,
एक कशिश है
आकर्षण सी भरी,
ये शांति है,
रेगिस्तान कि।
कुछ न होते हुए भी ,
शुकून है इसमे
चंचल सांवरी
मेरे बगीचे के,
पारूल के पुष्प कि तरह
सुन्दर है ये !!!

सतेन्द्र सेन सागर

कविता

बलराम भगत

छोटा सा ये निर्बल धागा

छोटा सा ये निर्बल धागा
ना जाने कितने रिश्तों को बचाता है ।

कभी ले रूप राखी का भाई को
उनके कर्तव्य की याद दिलाता है ।
कभी ले रूप मंगलसूत्र का पति पत्नी के पवित्र बंधन को दर्शाता है ।
छोटा सा ये निर्बल धागा ......

कभी बनकर फ्रेंडशिप बेंड ये दोस्ती का वचन निभाता है।
कभी यज्ञ और पूजा में
ले रूप रोली का प्रभु द्वारा प्रदत्त रक्षा कवच बन जाता है ।
छोटा सा ये निर्बल धागा ....

रौद्र रूप भी इसका बड़ा उपयोगी है ,
बनके फाँसी का फँदा
मानवता के दुश्मन से हमें बचाता   है।
छोटा सा ये निर्बल धागा

ना जाने कितने रिश्तों को बचाता है।

बलराम भगत, पटना ,(बिहार)

ग़ज़ल

कवि राजेश पुरोहित

खुदा से ख़ौफ़ नहीं कर रहा है आदमी।
एक दूजे का दुश्मन बन रहा आदमी।।

खैरियत पूछता कौन है अब किसी की यहाँ।
मतलबपरस्ती में जी रहा है आदमी।।

रंग नित नए बदलता अपने जीवन मे आदमी।
गिरगिट भी हैरान हो देख रहा आदमी।।

मर्यादा त्याग कर हँस रहा है आदमी।
रिश्तों का अपनापन खो रहा आदमी।।

खुद में बैठे भगवान को खोजता नहीं।
मंदिर मस्जिद में खोज कर रहा आदमी।।

इंसानियत को भूल हैवान बन रहा आदमी।
मेहनत की कमाई से जी चुराता आदमी।

देश का भला कैसे हो "पुरोहित" यहाँ।
हर कोई मनमानी पर उतर रहा आदमी।।

- राजेश कुमार शर्मा"पुरोहित"
संपर्क-98,पुरोहित कुटी, श्रीराम कॉलोनी, भवानीमंडी
पिन -326502 जिला-झालवाड़

ग़ज़ल

संजय "अश्क" बालाघाटी

रंगे हाथ उठाकर वो जन्नत मांगते है
लोग टूटे हुये तारे से मन्नत मांगते है।

एक पल नही यहां सांसो का भरोसा
ओर वो बरसो जीवन सलामत मांगते है।

दिया कुछ भी नही उसने अंधेरे के सिवा
फिर भी सब चांद की सन्गत मांगते है।

कितने नादान है आज भी ये दुनियावाले
कि पतझड से शजर की रंगत मांगते है।

खून के रिस्तो को खून से रंगाकर वे लोग
अब गैरो से वफा की हसरत मांगते है।

मुद्दत बीत गई यहां इंसान को मरे हुये
ओर मेरे "अश्क" भूतो से रहमत मांगते है।

संजय "अश्क" बालाघाटी
पुलपुट्टा बालाघाट मप्र
मो-९७५३६३३८३०

गज़ल

शिरीन भावसार

बस यूही......

कतरे अश्कों के ,आँखों से हमारी झरते रहे
स्वाभिमान को हमारे, अभिमान समझते रहे

झूठ का हमने कभी, दामन थामा ही न था मगर
हम से ज्यादा वो ,जमाने पर ऐतबार करते रहे

कहते है हमसे कि, रिश्तों की क़दर ही नहीं हमें
निभाने को उनसे रिश्ता ,हम हर रिश्ता भूलते रहे

एक आह पर हमारी जो ,बैचैन हो जाया करते थे
बेशुमार तोहफे अश्कों के ,वक्त बेवक्त हमें देते रहे

अपना लिया था हमने तो उन्हें, हर पहलू के साथ
फिर क्यों वो हमेशा हममें ही ,खामियां ढूंढ़ते रहे

हम तो खुद ही समर्पित थे, सज़दे में आपके फिर
क्यों हमें फूलों की मानिंद ,तोड़ कर बिखेरते रहे

हार गये हैं "शिरीन", समझाकर कई बार हम तो
बेख्याली में अपनी वो ,खुदा होने का ताना देते रहे

शिरीन भावसार
इंदौर (म. प्र.)

ग़ज़ल

सुनीता लुल्ला

अगर हो आग शिद्दत सी तो वो मशहूर करती है
ज़रूरत से जो बढ जाये तो वो मगरूर करती है

हमारी जान कहती है ,तुम्हें अपना बनाना है
मगर ये आशिकी ही है जो खुद से दूर करती है

दवा जो वक्त पर मिल जाये तो दर्दे दवा है वो
अगर कुछ देर हो जाये तो वो नासूर करती है

मुहब्बत में कभी नजदीकियां आसान होती हैं
कभी हालात की गर्दिश ही चकनाचूर करती है

नही मैंने कभी चाहा कि तुझसे दूर हो जाऊं
मगर दस्तूर ए दुनिया है जो तुझसे दूर करती है

दिखाने को ये दुनिया चांद तारों से भरी हरदम
ये तेरी बेरुखी है जो हमें बेनूर करती है

सुनीता लुल्ला

दोहे

मनोज जैन "मधुर"

हमनें अपनी जिंदगी,कर दी उसके नाम।
ठौर ठौर पर मिल रहे, हमको चारों धाम ।1।

तुम जीवन की प्रेरणा, तुम जीवन का ध्येय।
तुम ही पथ अनुगामिनी, तुम ही हो पाथेय ।2।

गंगा पूछे देखकर,अपने टूटे छंद ।
लोग हमें करने लगे बोतल में क्यों बंद ।3।

तट बनकर क्या पाएंगे, निकल यह निष्कर्ष।
पुल बनकर सबसे जुड़ें ,भर कर मन में हर्ष ।4।

जीवन में जो भी मिले,हँस हँस कर तू झेल।
चार दिवस की जिंदगी, धूप-छाँव का खेल ।5।

हृदय हृदय में आह है, अधर अधर पे मौन।
हुआ यन्त्रवत आदमी, उत्तर देगा कौन ।6।

नव जीवन में आपके, सपने हों साकार।
नित्य वरण करते रहें,विजय श्री के हार ।7।

रसना तू मत छोड़ना, रटना प्रभु का नाम।
साँसों को पावन करे, और सुधारे काम ।8।

मनोज जैन "मधुर"

दोहे

आदित्य राजौरिया "अजनबी"

माँ सागर है प्रेम का, माँ से रखिये प्रीत।
माँ से बढ़कर जगत में, और नही है मीत।1।

सबसे बढ़कर विश्व में, होता माँ का प्यार।
जिसको ये हासिल नहीं, व्यर्थ उसे संसार ।2।

जीवन के संघर्ष में, माँ रहती है संग।
माँ मूरत है प्रेम की, कभी न करना तंग।3।

जीवन ये जिसने दिया, माता उसका नाम।
बच्चों की चिंता करे, सहती कष्ट तमाम।4।

माँ की महिमा से बड़ा, सुना नहीं है गान।
मात कृपा से ही बने, जीवन सदा महान।5।

जीवन का आधार माँ, करती निश्छल प्रीत।
माँ के आशिर्वाद से, होती जग में जीत ।6।

बच्चों के हित के लिये, हो जाती कुर्बान।
समय पड़े पर माँ हरे, हर दुश्मन के प्राण।7।

हरदिन हरपल पूजिये, माँ चरणों को आप।
जीवन होता है सफल, कट जाते सब पाप।8।

आदित्य राजौरिया "अजनबी"

हाइकु

कैलाश बिहारी सिंघल

1-

दुख का साया
कसरत से मिले
सुख की माया

2-

योग से मिले
सुखद एहसास
निरोगी काया

3-

सुख दुख है
सकारात्मकता से
दुख भी सुख

4-

दुख का सुख
लेने हर युग मे
प्रभुजी आये

5-

सत युग में
सच्चाई का सुख था
हरिश्चंद्र को

6-

द्वापर युग
माखन चोरी सुख
गो पालन भी

7-

त्रेता युग में
मर्यादित सुख था
असुर अंत

8-

कल युग से
दुखी है जनता भी
जनार्दन भी

9-

सुख दुख तो
जीवन सिलसिला
चलेगा सदा

10-

दुख में सुख
ढूंढने की कला है
अतीत याद

कैलाश बिहारी सिंघल

हाइकु

किरण मिश्रा

1-
स्मृतियाँ वीथी
विचरते जज्बात
उगी कविता!
2-
नेत्र कानन
पलकों पर झूला
झूले बुँंदियाँ !
3-
मन प्रांगण
नाचा तन मयूर
पिया दर्शन!
4-
बरसे मेघ
लहराई चूनर
हरित धरा!
5-
लफ़्ज घुले
भावनायें मचली
कविता बही!

6-
ज़िन्दगी धूप
यायावर सा मन
ढूँढता चाँद!
7-
कागज कश्ती
लाद रहा.. ख़्वाहिशे
कोई पागल!
8-
मन पतंग
छूने को मचलती
ख्वाहिंशे चाँद!
9-
मन के झूले
कर्म के पेंग बढ़ा
नभ को छूले!
10 -
मत रूकना
चलना ही जिन्दगी
कहे झरना!

किरण मिश्रा,नोयडा

मुक्तक

दिनेश रघुवंशी

यहां पर जाल फैलाये हुए लाखों मछेरे हैं
यहां पर सिर्फ गहरी धुंध में लिपटे सवेरे हैं
न जाने कब , न जाने कब, न जाने कब ये समझेंगे
उजाले है कहाँ ये आस्थाओं के अंधेरे हैं ।1।

जिसे देखो तिरंगे पर अपना हक़ जताता है
तिरंगा क्या कहे चुपचाप बस आँसू बहाता है
हक़ीकत सिर्फ़ इतनी है हमेशा स्वार्थ सधने तक
सियासत करने वालों को तिरंगा याद आता है ।2।

विकट हालात में संयम दिखाया खूब वर्दी ने
ये सच है फ़र्ज अपना तो निभाया खूब वर्दी ने
सही प्रताड़ना लेकिन वहां पर आम जनता को
सियासत श्रेय ले लेकिन बचाया खूब वर्दी ने ।3।

नहीं लगता वतन में भीड़ को कानून का भय है
मगर वो भोगना होगा जो तकदीर में तय है
वतन के वास्ते जज़्बा किसी के दिल मे नही जागा
वरण में आस्था के नाम पर पाखंड की जय है ।4।

दिनेश रघुवंशी
साहित्य संपादक, दैनिक इंडिया केसरी

मुक्तक

बीना शर्मा "झकार"

सदा ही देश की ख़ातिर जो' जीते और मरते हैं |
वतन प्यारा उन्हें बस वो वतन की राह चलते हैं |
लिये इक आरज़ू दिल में डटे रहते है सीमा पर
ये सच्चे वीर ही बीना दिलों पे राज करते हैं |1|

मेरे श्याम कैसे गुज़ारा करेंगे |
तेरा नाम हरदम पुकारा करेंगें |
जाओ न छलिया मेरा दिल चुराकर -
सूरतिया किस बिधि निहारा करेंगे |2|

सुख-दुख जीवन रँग हैं दो हर हालत जीना होगा |
पथ में बिछे हुए काँटों को पलकों से चुनना होगा |
दुख की छाया सुख के सपने चलते साथ सदा हैं--
फ़टी हुई चादर को तो साँसों से सीना होगा |3|

इश्क   इश्क है कोई जरूरत नहीं |
हमें इश्क है उसकी जरूरत नहीं |
वफ़ा बेवफ़ा तमगे हैं इश्क के --
इश्क में सोदे की भी जरूरत नहीं |4|

बीना शर्मा "झकार"

मुक्तक

ब्रजेश शर्मा "विफ़ल"

ख़बर पल की नही कुछ भी न कुछ कल का ठिकाना है ।
फ़क़त इक प्रेम है जग में जिसे सब कुछ निभाना है ।
ये दौलत और शोहरत ज़र-ज़मीं दो पल ख़ुशी देंगे,
इसी मिटटी में ही आखिर सभी कुछ तो समाना है ।1।

पीर अपनी देह की मन में छुपाती बेटियाँ ।
दर्द सहकर रोज ही हैं मुस्कुराती बेटियाँ ।
टूट कर ख़ुद ही लगीं फिर से विनिर्माण में ,
शान कुल की लाज कुल की यूँ निभाती बेटियाँ ।2।

नज़र भर देख लूँ उसको नज़र में जो समाया है ।
बहुत अपना सा' लगता है मग़र फिर भी पराया है ।
मैं' उसकी चाहतों में भी बड़ी शिद्दत से' हूँ शामिल,
ज़माने से मुझे उसने न जाने क्यूँ छिपाया है ।3।

नही करता कभी ज़ाहिर मुझे उसकी जरुरत है।
उसी से इश्क़ है मुझको वही मेरी इबादत है।
मैं सजदों की नुमाइश में नही करता यकीं लोगों,
चला आएगा वो मुझ तक अग़र उसको मुहब्बत है ।4।

ब्रजेश शर्मा "विफ़ल"

मुक्तक

जयकृष्ण चांडक

ज़रा सी बात पे हद से गुज़र जाऐं नहीं मुमकिन,
जो वादे कर लिये उनसे, मुकर जाऐं नहीं मुमकिन,
इरादे कर लिये अपने किसी चट्टान के जैसे,
किसी तूफां में तिनकों सा बिखर जाऐं नहीं मुमकिन ।1।

बडा ज़ालिम ज़माना है, निकलकर देखलो घर से,
किस्सा सदियों पुराना है, निकलकर देखलो घर से,
यहां बस ज़िन्दगी के नाम पर धोखा ही धोखा है,
फ़कत मीठा बहाना है, निकलकर देखलो घर से ।2।

बहुत सूखे किनारे थे, हमने तोडकर देखे,
बिखरे, बिखरे सहारे थे, हमने तोडकर देखे,
अंधेरे घर पडे थे कुछ, राख ही राख थी उनमे,
वो सारे चांद,तारे थे, हमने तोडकर देखे ।3।

जान हमने भी रखदी थी, निशां पर आ नहीं पाई,
मुस्कुराऐ, मुस्कुराहट पर लबों पर आ नहीं पाई,
मैं कहना चाहता था, कुछ यहां पर कह नहीं पाया,
बात निकली तो दिल से थी, जुंबा पर आ नहीं पाई ।4।

जयकृष्ण चांडक

लघुकथा

ईर्ष्या

बह्त अच्छे खानदान और बह्त संस्कारी है छोटी बहू , ये पूरे परिवार को मालूम था । ससुराल संयुक्त परिवार था । उसके चार जेठ थे । घर में सब बहू से प्रेम भी करते थे । बस बीच वाली जेठानी को ये बर्दाश्त नहीं होता था । उसे अपने में कमी महसूस होती थी | वो मन ही मन उसके सामने हीन भावना से ग्रसित रहती थी । जबकि छोटी बहू में अहंकार नहीं था । वो सभी का मान रखती थी ।

मगर बीच वाली जेठानी अंदर ही अंदर उससे ईर्ष्या रखती थी और सभी को उसके खिलाफ भड़काती रहती थी । पर जब उसके भड़काने का लोगों पर बह्त अधिक असर होते ह्ए नहीं दिखाई दिया तो उसे नई खुराफात सूझी ।

एक दिन किसी बात पर बब्लू)सबसे बड़े जेठ का बेटा 14-15 साल का (छोटी बहू से "---छोटी बहू उसे देखती रह गई और..... " हैं । बीच वाली जेठानी जैसे फतह पा लिया हो ,एक कुटिल मुस्कान छोड़ती हुई मन ही मन " बच्चों को भड़काना अधिक आसान है । "---

---पूनम झा

कोटा राजस्थान

लघुकथा

शक

घर में घुसते ही राजन ने हंगामा शुरू कर दिया। जोर जोर से बोलने लगा,
"तुम मैनेजर के रूम में क्या कर रही थी??" श्वेता हैरान हो कर बोली,
"आप मेरे बैंक आये थे?"
हां जी.. तो ही तो हमें पता चला...
श्वेता बोली, " मैं तो कुछ पेपर और फाइल देने गयी थी।मुझे सब पता है कौन सी फाइल और कौन से पेपर्स, तुम चपरासी के हाथ भी तो भिजवा सकती थी।श्वेता अचंभित खड़ी रह गई। हर बार हर किसी पर शक, कोई आदमी इतना नीचे कैसे गिर सकता है, मेरे पिता की उम्र के मैनेजर को भी नहीं छोड़ा। जब से राजन की नौकरी छूटी, उनका शक और चिड़चिड़ापन बढ़ता ही जा रहा था।

श्वेता ने कहा," सारा दिन घर में बैठ शायद तुम्हें डिप्रेशन होने लगा है, किसी अच्छे डॉक्टर से सलाह लेते हैं"। इतने में ही मां जी आ गई बोली," मेरे बेटे को पागल कहने वालीं तुम कौन होती हो? सारा दिन आफिस में तुम गुलछर्रे उठाती हो, और मैं तुम्हारी बेटी को संभालती हूं, लो पकड़ो इसे"ऐसा कहकर छः महीने की पायल को उसे पकड़ा दिया।

ये सारी बातें श्वेता को बहुत कचोट रही थी। अपनी गृहस्थी को बचाने की जी-तोड़ कोशिश में लगी श्वेता ने प्यार से राजन से कहा,"आप पापा से बात करो, कहीं न कहीं तो आपकी नौकरी लगवा ही देंगे।बस इतना कहते ही राजन ने उसके मायके वालों को भला बुरा कहना शुरू कर दिया और एक थप्पड़ भी उसे लगा दिया।अपराधिन सी खड़ी श्वेता एकदम सकते में आ गई बोली," अपने पैरों पर स्वयं खड़ी हूं, इस तरह नारकीय जीवन बिताने से तो मैं अकेली ही.... अपनी बच्ची को उठा कर श्वेता एक नई डगर पर निकल पड़ी....

चंचल पाहुजा

लघुकथा

जलना और लड़ना

'अर्चना ! पगला गयी हो क्या ? कोई इस तरह भी करता है !' विनय ने कहा .

'तुम नहीं जानते हो . जब से मैंने उस भयावह बाढ़ को देखा है .मेरे बच्चों के वो चेहरे मेरे सामने बरबस आ जाते हैं . क्या खाया होगा ? कैसे होंगे ? मासूम चेहरों पर बाढ़ का कहर बर्दाश्त नहीं होता मुझसे !'

'तुम्हारी हालत भी देखो ! भगवान् सब भला करेंगे . सब ठीक हो जाएगा !'

'भगवान् ने ठीक ही रखना होता तो ये सब क्यों करते ? भगवान् ऐसा निर्दयी नहीं हो सकता . ये सब शासन में बैठे अंधों की देन है . भरोसा उठ गया है मेरा इस सिस्टम से . मुझे लगता है कुछ हमें ही करना होगा .'

'इस बार कोई नयी मुसीबत मत मोल ले लेना . पहले भी ट्रांसफर हुआ है तुम्हारा इस आदत की वजह से . क्या जरुरत है इतना जुड़ने और सोचने की बच्चों और स्कूल से !'

'तुम न समझ पाओगे हमको . हम उनकी मेडम भी हैं और माँ भी . ट्रांसफर होता रहे पर हम सच और सही नहीं छोड़ेंगे . हां, जानते हैं शिक्षक दीपक होता है ...जलना और लड़ना ही उसकी सार्थकता है !'

जागरण

बड़े जोरशोर से कीर्तन और भजन चल रहा था . पंडित जी बहुत प्रसन्न थे भक्तों की भारी भीड़ को देखकर . तभी आयोजकों में से एक युवक उठा और माइक अपने हाथों में लेकर बोलना शुरू किया - 'सभी प्रभु प्रेमियों को सादर नमस्कार ! भक्तो ! आप सभी भगवान् का गुणगान यहाँ कर रहे हैं और आपके ह्रदय बहुत निर्मल हैं . आप ये भी जानते हैं कि भगवान् को हम तुच्छ प्राणी क्या भेंट दे सकते हैं ? वह तो सबको देता है और बिना भेदभाव के देता है . उसे हमारे बनाए किसी मंदिर या किसी राजभोग या वस्त्राभूषण की जरुरत नहीं है . वह सर्वसमर्थ है. लेकिन उसके बनाए इस संसार में वह सबको मौका जरुर देता है विजय का . आज ऐसा ही समय है . आपके अपने आज बाढ़, भुखमरी और बिमारी से ग्रस्त हैं . अपने तन,मन और धन को पवित्र करने का यही समय है . आप में जो लोग बाढ़ पीड़ितों की और बीमारों की सेवा करना चाहते हैं पंडाल के पीछे अपने नाम लिखवा सकते हैं . आज भगवान् को नहीं भगवान् के बनाए हुए लोगों के लिए आपके दान की जरुरत है . जी खोलकर आगे आइये और प्रार्थना है कि भगवान् को पैसा चढ़ाकर भगवान् को शर्मिंदा न करें ... दान सहायता दान पेटी में डालें और जो लोग अतिरिक्त खाद्य सामग्री या दावा देना चाहते हैं वे अपनी रसीद जरुर लें .'

अचानक से कीर्तन करने वालों के स्वर मद्धम हो गए थे . पंडित जी का चेहरा मलीन और भक्तों की तालियाँ जोश भरी .

शब्द मसीहा

लघुकथा

आइ लव यू

यू अचानक कंधे पर किसी के हाथ को महसूस कर चौक पड़ी मेघा । मुड़कर देखा तो अभय को सामने देख मुस्कुरा पड़ी । अभय भी नजरें झुका कर उसकी डाँट का इंतजार कर रहा था ।

"उफ्फ अभय तुम आखिर आ ही गये " ! नहीं ही मानी मेरी बात , हैं ना ।

हमेशा मेरी बात को ना मानना ऐसे भी तुम्हारा सबसे पसंदीदा काम हैं । क्यों सही कहा ना ?
अब बोलो भी यू क्यों खड़े हो ? ऐसे खड़े हो कर मासूम बनने का नाटक मत करों । सब समझती हूँ मैं । बोलो क्यों नहीं मानी मेरी बात ? क्यों आ गये सब छोड़कर ?

मेघा आइ लव यू ......
नहीं रह सकता एक पल तुम्हारे बिना बचपन से लेकर जवानी जवानी से लेकर बुढ़ापा बुढ़ापे से लेकर ....
बोल ना पाया अभय ।

परिस्थिति भांप मेघा बोली हाँ तो !
मौत ही ना पर अभय ये तो इंसान के जीवन की सच्चाई हैं ।
फिर तुमने वादा किया था कि तुम बच्चों की परवरिश करोगे मेरे बाद पर तुमसे ये वादा भी ना निभाया गया ।
बच्चों को अकेला छोड़ आ गये ।

मेघा किसी को मेरी जरुरत नहीं सब अपनी जिन्दगी में खुश हैं ।कोई अकेला नहीं बल्कि अकेली तो तुम थी अकेला तो मैं हो गया था तुम्हारे बिना । हर एक पल संग बिताया तुम्हारे साथ बचपन से लेकर बुढ़ापे तक । वो पेड़ जिसकी छांव में हम कभी प्यार के तराने गाते थे अब वो भी उदास रहता हैं । रोज तुम्हारी कब्र के पास बैठा रहता था पर फिर लगा तुम्हें इस दुनिया में मेरी जरुरत होगी इसलिए आ गया मेघा ।

पर क्यों बैठे रहते थे मेरी कब्र के पास तुम अभय ?
मेघा तुम्हें अंधेरे और अकेलेपन से डर लगता था ना इसलिए ।

मेघा आइ लव यू........
क्या कहती मेघा अब और गुस्से का दिखावा ना कर सकी सीने से जा लगी अभय के ।
धीरे से कहा अभय आइ लव यू टू.......

रुबी प्रसाद, सिलीगुड़ी

भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार पर रिपोर्ट-कंचन अपराजिता

अच्युतानंद मिश्र **रिपोर्ट** **कंचन अपराजिता**

युवा कवि की प्रतिभा और संभावनाओं को सम्मानित करने वाला भारत भूषण पुरस्कार इस साल अच्युतानंद मिश्र को दिया जा रहा है ।बोकारो (झारखंड) में 11अगस्त1982 को जन्मे मिश्र को यह पुरस्कार हिंदी की प्रतिष्ठित पत्रिका 'हंस' में गत वर्ष जनवरी में प्रकाशित कविता 'बच्चे धर्मयुद्ध लड़ रहे हैं' के लिए दिया गया।

इस पुरस्कार की स्थापना तार-सप्तक के कवि भारत भूषण अग्रवाल की स्मृति में किया गया हैं। कवि, लेखक और आलोचक भारत भूषण जी को मरणोपरांत मिले साहित्य अकादमी पुरस्कार की राशि से उनकी पत्नी बिन्दु जी ने 1979 मे यह पुरस्कार आरंभ किया था। बिन्दु जी के देहांत के बाद उनकी पुत्री अनिवता अब्बी और बेटे अनुपम भारत इस पुरस्कार को जारी रखे हैं। पुरस्कार के तहत 25 हज़ार रुपये नगद और प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है। यह पुरस्कार हर वर्ष 35 वर्ष से कम आयु के किसी कवि/कवयित्री की श्रेष्ठ कविता, जो उस वर्ष अंतराल मे छपती हैं उसको दिया जाता है। वितरण समारोह हर पांच वर्ष में आयोजित किया जाता है।

पुरस्कार के निर्णायक मंडल में वर्तमान में अशोक वाजपेयी, अरुण कमल, उदय प्रकाश, अनामिका और पुरुषोत्तम अग्रवाल शामिल हैं। जिसमे बारी-बारी से हर वर्ष एक निर्णायक पुरस्कार के लिए कविता का चुनाव करता है।

पहला भारत भूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार 1979 में अरुण कमल को कविता ' उर्वर प्रदेश ' पर मिला था ।

यह पुरस्कार अब तक अरुणकमल, उदय प्रकाश, विनोद भारद्वाज, अनामिका, गगन गिल, देवीप्रसाद मिश्र और कुमार अम्बुज जैसे अनेक कवियों को मिल चुका है ।पिछले तीन दशकों से यह युवा कविता का चर्चित पुरस्कार माना जाता है।

पिछले छः सालों में व्योमेश शुक्ल(2010), अनुज लुगुन(2011), कुमार अनुपम(2012), प्रांजल धर(2013) को भी भारत भूषण मिला,2014 मे आस्तीक वाजपेयी को उनकी कविता 'विध्वंश की शताब्दी' पर अरुण कमल ने उन्हें भारत भूषण दिया । 2015 में यह पुरस्कार किसी को नहीं दिया गया।निर्णायक अशोक वाजपेयी ने बताया कि इस वर्ष कोई भी कविता पुरस्कार के योग्य छपी नहीं मिली. उन्होंने यह भी बताया कि ' समास-10 ' में छपी 'पेड़' कविता की उन्होंने अनुशंसा की थी लेकिन

कवि की उम्र 35 वर्ष से अधिक पायी गई. 2016 मे यह पुरस्कार कवियत्री शुभमश्री को उनकी कविता- 'पोएट्री मैनेजमेंट'- को दिया गया था.वर्ष के निर्णायक थे उदय प्रकाश थे ऐसा कहा जा रहा है कि उन्होंने पहले से तय कर रखा था कि पुरस्कार किसी कवियत्री को दिया जायेगा अत: उनकी कविता-'पोएट्री मैनेजमेंट को पुरस्कार के लिए चुना गया । इस वर्ष के पुरस्कार का चुनाव अनामिका ने किया।

अच्युतानंद मिश्र का जन्म 11 अगस्त 1982 को बोकारो में हुआ. स्कूल तक की पढ़ाई बोकारो से की. स्कूली शिक्षा ग्रहण करने के बाद उन्होंने दिल्ली विश्विद्यालय से भौतिकी में आनर्स किया,फिर जामिया विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम ए किया और इन दिनों वह अम्बेडकर विश्विद्यालय से पी एच डी कर रहे हैं ।उनके लेखन को कलमबद्ध किया जाय तो महत्वपूर्ण पत्र पत्रिकाओं में कविताएं एवं आलोचनात्मक गद्य प्रकाशित. कविता संग्रह 'आंख में तिनका' वर्ष 2013 में प्रकाशित. आलोचना की पुस्तिका 'नक्सलबाड़ी आंदोलन और हिंदी कविता' प्रकाशित. प्रसिद्ध अफ़्रीकी उपन्यासकार चिनुआ अचेबे के उपन्यास 'ऐरो ऑफ गॉड' का 'देवता का बाण' शीर्षक से हिंदी अनुवाद हार्पर कॉलिंस से प्रकाशित. प्रेमचंद के प्रतिनिधि गद्यों का प्रेमचंद: समाज संस्कृति और राजनीति शीर्षक से संपादन. साहित्य की समकालीनता शीर्षक के अंतर्गत साहित्य और समय के अंतर्संबंधों पर केंद्रित लेखों का संकलन एवं संपादन ,आदि शामिल हैं ।

उनकी कविता बच्चे धर्मयुद्ध लड़ रहे हैं को इस बार इस पुरस्कार के लिए चुना गया है । यह कविता उन्होंने अमेरिकी युद्धों में मारे गए, यतीम और जिहादी बनाए गए उन असंख्य बच्चों के नाम है । इसमें उन्होंने इंसानी लड़ाई में किस तरह हाथ में खिलौना खेलने वाले बच्चों ने अपनी जान गंवाई, उसका मार्मिक चित्रण किया है।

बच्चे धर्मयुद्ध लड़ रहे हैं
/////////////////////////

सच के छूने से पहले
झूठ ने निगल लिया उन्हें
नन्हें हाथ
जिन्हें खिलौनों से उलझना था
खेतों में बम के टुकड़े चुन रहे हैं
वे हंसते हैं
और एक सुलगता हुआ
बम फूट जाता है
कितनी सहज है मृत्यु यहां
एक खिलौने की चाभी
टूटने से भी अधिक सहज

और जीवन, वह घूम रहा है
एक पहाड़ से रेतीले विस्तार की तरफ
धूल उड़ रही है
वे टेंट से बाहर निकलते हैं
युद्ध का अठ्ठासिवां दिन
और युद्ध की रफ्तार
इतनी धीमी इतनी सुस्त
कि एक युग बीत गया
अब थोड़े से बच्चे
बचे रह गए हैं
फिर भी युद्ध लड़ा जाएगा
यह धर्म युद्ध है
बच्चे धर्म की तरफ हैं
और वे युद्ध की तरफ
सब एक-दूसरे को मार देंगे
धर्म के खिलाफ खड़ा होगा युद्ध
और सिर्फ युद्ध जीतेगा
लेकिन तब तक
सिर्फ रात है यहां
कभी-कभी चमक उठता है आकाश
कभी-कभी रौशनी की एक फुहार
उनके बगल से गुजर जाती है
लेकिन रात और
पृथ्वी की सबसे भीषण रात
बारूद बर्फ और कीचड़ से लिथड़ी रात
और मृत्यु की असंख्य चीखों से भरी रात
पीप, खून और मांस के लोथड़ो वाली रात
अब आकार लेती है
वे दर्द और अंधकार से लौटते हैं
भूख की तरफ
भूख और सिर्फ भूख
बच्चे रोटी के टुकड़ों को नोंच रहे हैं

और वे इंसानी जिस्मों को
कटे टांगों वाली भूख
खून और पीप से लिथड़ी भूख
एक मरियल सुबह का दरवाजा खुलता है
न कोई नींद में था
न कोई जागने की कोशिश कर रहा है
टेंट के दरवाजे
युद्ध के पताकों की तरह लहराते हैं
हवा में, बच्चे दौड़ रहे हैं
खेतों की तरफ
रात की बमबारी ने
कुछ नए बीज बोए हैं

उनकी कुछ अन्य कविताए -

विकास के इस दौर में खानों में बंटती मनुष्यता पर सवाल खडे करती है अच्युतानंद की कविताएं -

'कि दूध की बोतलें
लटकाता छोटुआ
दरवाजे की मनुष्यता से बाहर'
क्यों रह जाता है कि
'क्या दूध की बोतलें,
अखबार के बंडल
सब्जी की ठेली हीं
उसकी किताबें हैं..
//

शोर लगाते लड़के
जब सचमुच का भूख-भूख चिल्लाने लगे
तो पुलिस ने कहा वे खूंखार थे
नक्सली थे तस्कर थे...
किसी ने यह नहीं कहा वे भूखे थे
और जवान हो गये थे
बूढ़े हो रहे देश में

इस तरह मारे गए जवान लड़के।
///////////////////////////////

बच्चे- 1

बच्चे जो की चोर नहीं थे
चोरी करते हुए पकड़े गए
चोरी करना बुरी बात है
इस एहसास से वे महरूम थे
दरअसल अभी वे इतने
मासूम और पवित्र थें
की भूखे रहने का
हुनर नहीं सीख पाए थे

बच्चे -2

सड़क पर चलते हुए एक बच्चे ने घुमाकर
एक घर की तरफ पत्थर फेंका
एक घर की खिडकी का सीसा टूट गया
पुलिस की बेरहम पिटाई के बाद बच्चे ने कबुल किया
वह बेहद शर्मिंदा है उसका निशाना चूक गया

कंचन अपराजिता
बिहार

"गाय को सूअरों की की तरह मत पालो"

चौ.मदन मोहन समर

कभी देखते थे सूअरों के झुंड नालियों और सड़कों पर बिलबिलाते रहते थे। वे सुअर किसके हैं पता नहीं होता था।

करीब दस-बारह साल से लोग गाय बैल को सूअरों की तरह पालने लगे हैं।न उन्हें बांधने की जरूरत न खिलाने की जहमत ।कौन इनका "धनी-धौरी" किसी को पता नहीं।बस दूध निचोड़ा और सड़कों पर छोड़ दिया।किसान भी परेशान व्यापारी भी त्रस्त।सबसे ज्यादा जान सांसत में वाहन चालकों की।

शहरों की छोड़िये अब गांवों में भी यही चलन चल पड़ा है। सारे गाय-ढोर सड़कों पर और दूसरे की फसलों में।

मैं एक किसान के रूप में गाय बैल भैंस पालता रहा हूँ।मेरे पशुओं के बाकायदा नाम होते हैं।आज भी।बिल्कुल बच्चों की तरह।

गांव-कस्बों में कोई घर ऐसा नहीं होता जिसके पास गाय-ढोर न हों।लेकिन पहले उन घरों की परछट्टी-छानी में एक छप्पर होता था जिसे सार कहते हैं।खनौटा होता था जिसमे दाना पानी दिया जाता है।पशु का अपना खूँटा-गिरमा होता था जो उसकी मिल्कियत होता है, जहां वह अधिकार पूर्वक आकर बंधता है और आराम करता है।

अपने अनाज से पहले पशुओं के भूसे-दाने के इंतज़ाम की चिंता होती थी। भूसे का कोठा घर की रसोई जितना ज़रूरी था।

एक ख़िरका(जहां गांव के सारे जानवर सुबह चरवाहे एकत्र करते थे) होता था। हम नीम बबूल की दातुन चबाते हुए अपने जानवरों को हमारे चरवाहे रज्जू की "नार" (चरवाहे के पशुओं का झुंड) में छोड़ने जाते और गोधूलि पर अपने जानवर नदी के किनारे से लेकर आते थे। रज्जू, प्रेमा, मोती, कल्लू गांव के खानदानी चरवाहे थे।रंभाती हुई गाय बछिया बछड़ा भैंस फुदकते उचकते घर आते थे। अगर कोई जानवर जंगल मे छूट गया य बदमाशी से इधर उधर रह गया तो नींद नहीं आती थी, घण्टों तलाश करते चरवाहे को साथ लिए बरसात सर्दी में दौड़ते भागते।मन डरता था अरे चँदा गाय भीग रही होगी, लालू बछड़ा ठिठुर रहा होगा। न जाने इनकी तलाश में मैंने खुद कितनी बार नदी की तेज धार पर की थीं। जानवर जब अपने खूंटे पर आ जाता तब चैन पड़ता।

कुछ लोगों के जानवर चोर और शरारती होते। वे घर न आकर खेतों की फसल उजाड़ते तो जानवर का मालिक शर्मिंदा होकर माफी मांगता। जैसे उसके बच्चे ने गलती कर दी हो। कहावत थी बच्चे और ढोर पर से लड़ना बेवकूफी है।अर्थात ढोर को बच्चा माना जाता था।कांजी हाउस में किसी का जानवर बन्द होना उसके लिए अपमान जनक होता था।कहीं का भटका बैल गाय य भैंस 15 दिन कांजी हाउस में रह जाते तो नीलाम होते थे।हमने कई जानवर काँजी हाउस की नीलामी में खरीदे और वे हमारी सार की शोभा अनेक पीढ़ियों के रूप में बढाते रहे। किन्तु जानवर को आवारा छोड़ना य बेचना सबसे बड़ा कुसंस्कार माना जाता था।
धीरे धीरे लोगों को न जाने क्या हुआ है।गौरक्षा के राजनीतिक और फेसबुकिया संस्करण के बाद गाय और गौवंश ज्यादा असुरक्षित हो गया। बीड-जंगल खत्म हो गए।नहर-सड़क की पटरियां समाप्त हो गईं। नरम चारे को गाजर घास ने दबा लिया।खेतों की मेहड़ को नींदानाशक जहर ने मार दिया।खिड़के, खूंटे, खनौटे, बिन्डे किस्से में शेष रह गए। और गाय तथा गौवंश सार गिरमा से धकिया कर सूअरों की तरह मारा-मारा सड़कों पर भटकने के लिए छोड़ दिया गया।
किसी एक जगह नहीं बल्कि पूरे भारत मे यह कोढ़ न जाने कैसे फैल गया कि रात में अपनी गाय ढोर की चिंता खत्म। ये बेचारे सड़कों पर बैठने के आदि हो गए। दुर्घटनाएं बढ़ने लगी हैं मोटर सायकल कार जीप वाले टकरा जाते हैं और बड़े वाहन बेकसूर जानवरों को कुचल जाते हैं।कांजी हाउस बन्द हो गए क्योंकि लोग इतने बेशर्म हो गए अब कि, कांजी हाउस से पशुओं को छुड़ाते ही नहीं ।
इसका ही परिणाम हुआ जो गौ तस्कर इन्हें बेखटके ट्रक में भरते हैं और ले जाते है स्लाटर हाउस। आप बस नारे लगाते रहते हैं झगड़े करते रहते है नेतागिरी और गौशाला के नाम पर नोट पीटते रहते है। एक बात मेरे गले नहीं उतरती ये जो लोग गौवंश को इस तरह से लावारिस छोड़ कर बेफिक्र हो गए हैं अपनी भैंसों को कभी नहीं छोड़ते।उसे नहलाते भी हैं।खिलाते भी हैं।क्योंकि उसका दूध ज्यादा होता है फिर उसके मरने पर आप नारेबाजी भी नहीं कर सकते।
गाय को माता कहने भर से काम नहीं चलेगा।गौरक्षा का पहला कदम अगर उठाना है तो सड़कों से गाय को अपने सार में बांधो।जो न माने उसका सामाजिक बहिष्कार करो।गोचर भूमि के अतिक्रमण हटा कर उनके चारे की व्यवस्था करो।गाय को सुअर बनने से बचाओ पहले जो बेहद जरूरी है। तब अबकी दिवाली के अगले दिन गोवर्धन पूजा करना।
.......**चौ.मदन मोहन समर**

भारतीय चिंतन में हिंदी का विकास

--

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई--

भारत में हिंदी के पाठकों की संख्या सर्वाधिक है। हिंदी बोलने वालों की संख्या 50 करोड़ से ज्यादा होगी। आज भारत में 80 करोड़ लोगों की मातृभाषा हिंदी है। 30 करोड़ लोग इसे दूसरी या संपर्क भाषा रूप में प्रयोग करते है। 1997 में हुए सर्वे के अनुसार 66 फीसद इसे समझ सकते हैं। एक बड़ी संख्या में लोग मानते हैं कि हिंदी को ही राष्ट्रभाषा होना चाहिए। लेकिन आज तक भी हिंदी को अपना सही स्थान नहीं मिल पाया है। इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है।

गुजरात के प्रसिद्ध कवि नामदेव वह व्यक्ति थे, जिन्होंने 1833-86 में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का आह्वान किया। स्वयं पंजाब मूल का होते हुए भी भगत सिंह ने 1925 में भारत की सभी भाषाओं की लिपि देवनागरी और हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए कहा था। गांधी जी ने 29 मार्च 1918 को इंदौर में आठवें हिंदी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए अपने सार्वजनिक उदबोधन में पहली बार हिंदी को ही भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा देने का आह्वान किया था। उस समय देश परतंत्रता की बेड़ियों से स्वतंत्र होने के लिए संघर्ष कर रहा था। उस समय गांधी जी ने यह भी कहा था कि जब तक हम हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा ओर प्रांतीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नही देंगे तब तक स्वराज्य की सब बातें निरर्थक हैं। एक लंबे संघर्ष के उपरांत स्वतंत्रता मिली और 14 सितंबर 1949 को संवैधानिक रूप से हिंदी देश की राजभाषा बनी। संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान किया गया है कि देवनागरी लिपि के साथ हिंदी भारत की राजभाषा होगी। तब से 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में आयोजित किया जाने लगा। हिंदी दिवस पर पूरे देश में स्थान-स्थान पर आयोजन होते हैं, भाषण-व्याख्यान होते हैं, प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं, कवि गोष्ठियाँ होती हैं तथा साहित्यकारों को सम्मानित किया जाता है, हिंदी सप्ताह-पखवाड़े मनाए जाते हैं किंतु स्थिति जस की तस है। हिंदी का कुछ नहीं होगा, क्या होगा आदि आदि पर प्रसिद्ध व्यंग्यकार आलोक पुराणिक के अनुसार हिंदी का जो हुआ या हो रहा है, इस सब के बावजूद हिंदी बढ़ रही है,(अखंड रुदन के बावजूद) इस पर चर्चा थोड़ी आगे।

हिंदी के प्रति अपने प्रेम और लगाव को, उसके महत्व को सभी ने अपने अपने ढंग से व्यक्त किया। तो इस पर भी दृष्टि डालते चलें। लगभग एक शताब्दी पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी भाषा के महत्व पर कहा था--

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के,मिटे न हिय को सूल।।

तो रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए लिखा--" आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित कमल के समान है जिसका एक-एक दल एक-एक प्रांतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति है।किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा ही नष्ट हो जाएगी। हिंदी आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य मणि भारत भारती होकर विराजे। महादेवी वर्मा कहती थी कि हिंदी राजकाज चलाने की थोपी गई भाषा नही है, अपितु इसके द्वारा राष्ट्रीय उल्लास, उमंग, आशा और चेतना उजागर हुई है तो केशव चंद्र सेन का कहना था कि एक भाषा के बिना भारत में एकता नहीं हो सकती और वह भाषा हिंदी है।

राहुल सांकृत्यायन के लिए हिंदी विश्व की महान भाषा थी, तो फादर कामिल बुल्के के विचार के अनुसार हिंदी बहूरानी और अंग्रेजी नौकरानी थी।। उन्होनें यह भी माना कि हिंदी का अपमान करने वाले बाहरी व्यक्ति नहीं,बल्कि इसी देश के व्यक्ति हैं। मैं यह मानती हूँ कि यह एक ऐसा कड़वा सच है जिससे हर हिंदी प्रेमी को बहुत दुख होगा।

लोकमान्य तिलक राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा हिंदी को ही मानते थे और लाला लाजपतराय तो स्पष्ट मानते थे कि राष्ट्रीय मेल व एकता के लिए देश में हिंदी व नागरी का प्रचार आवश्यक है। राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद तो हिंदी के प्रबल समर्थक थे तो राष्ट्रपति वी.वी.गिरि हिंदी पढ़ने और पढ़ाने को अपना राष्ट्रीय कर्तव्य मानते थे।

विदेशियों ने तो हिंदी का अध्ययन बहुत पहले से ही प्रारंभ कर दिया था, लेकिन प्रशासनिक अधिकारी के रूप में अगस्त 1782 में आते ही हेनरी टामस कोलब्रुक (1765-1837) ने कुछ इस तरह अपने विचार व्यक्त किए- "जिस भाषा का व्यवहार भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग करते हैं, जो पढ़े-लिखे तथा अनपढ़ दोनों की साधारण बोलचाल की भाषा है और जिसको प्रत्येक गाँव में थोड़े-बहुत लोग अवश्य समझ लेते हैं, उसी का यथार्थ नाम हिंदी है। इसी तरह मॉरीशस के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. शिव सागर रामगुलाम ने कहा था--हम मॉरीशस वासी हिंदी की महानता को भली-भाँति पहचानते हैं। यही एक भाषा है जिसे लेकर हमने अपने बाप-दादा की परंपरा को जिंदा रखा है तो महर्षि अरविंद का कहना था कि भाषा के भेद से देश की एकता में बाधा नहीं पड़ेगी। सब लोग अपनी मातृभाषा की रक्षा करते हुए, हिंदी को अपनाकर इस भेद को नष्ट कर देंगे। कुछ इसी तरह के विचार डॉ. जयंत विष्णु नार्लीकर ने व्यक्त किए थे--अगर भारत की सोई हुई वैज्ञानिक प्रतिभाओं को जगाना है, तो विज्ञान की शिक्षा का माध्यम हिंदी को बनाना होगा। इसके बिना भारतीय जनता और वैज्ञानिक विचारों के बीच विद्यमान दूरी को खत्म नहीं किया जा सकता और ऐसी दशा में जनता से संपर्क स्थापित करने के लिए जन भाषा का सहारा लेना जरूरी है, और अब कुछ विदेशी विद्वानों के विचारों पर भी दृष्टि डाल ली जाए। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के श्री बैरन हॉलैंड का कहना है--विदेशियों से साक्षात्कार करते समय मैं यह पाता हूँ कि विदेशी चाहे जर्मनी, अमरीका, चेकोस्लोवाकिया से आए हों, वे भारतीयों से हिंदी में बात करना चाहते हैं, लेकिन भारतीय सदैव ही उनसे अंग्रेजी में बात करना पसंद करते हैं। यह लज्जापूर्ण स्थिति है। कुछ इसी तरह की बात सोवियत हिंदी विद्वान प्रो.जेड.एम. दीमशिट्स ने भी कही--यह बड़ी अजीब बात है कि

किसी विदेशी को वर्षों की मेहनत के बाद अपने देश में सीखी हुई हिंदी को भारत में भुलाने की कोशिश करनी पड़ती है। भारत में कोई चाह कर भी हिंदी नहीं बोल सकता, क्योंकि यहाँ अधिकतर शिक्षित वर्ग अंग्रेजी में ही बात करना पसंद करता है। तो प्रो.वासन्निकोल का कहना था--यह विचित्र बात है कि एक हिंदी भाषी अन्य हिंदी भाषी के साथ हिंदी में नहीं, अंग्रेजी में ही बोलना पसंद करता है। अंग्रेजी, जो भारत के किसी भी क्षेत्र की मातृभाषा नहीं है, का पूर्ण बहिष्कार कर दिया जाए, यह समय अब आ गया है। ओडोल स्मेकेल के अनुसार--जब तक भारत अपनी भाषाओं को नहीं अपनाता, उसे सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता।

हिंदी के साथ सबसे बड़ा दुर्भाग्य यही रहा कि बाहर वालों ने उसके महत्व को समझा, पर अपने ही घर में हिंदी उपेक्षित रही। जो सम्मान, महत्व हिंदी को मिलना चाहिए था वह उसे अपने घर में नहीं मिला। हम स्वतंत्र तो हुए, पर सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं हो पाए क्योंकि जो स्वाभिमान हमें हिंदी पर होना चाहिए था वह अंग्रेजी पर हुआ, जिसका परिणाम हम देख ही रहे हैं। भगवती प्रसाद देवपुरा जी तो इस सबसे इतने विक्षुब्ध थे कि उन्होनें "अंग्रेजी हटाओ" अभियान ही आरंभ कर दिया। साहित्य मण्डल नाथद्वारा से "अंग्रेजी हटाओ आंदोलन" ग्रंथ भी प्रकाशित हुआ है।अपने लेख "दासता की पोषक अंग्रेजी" में देवपुरा जी लिखते हैं--देश की स्वतंत्रता के इन पचास वर्षों में हिंदी भाषा-भाषी राज्यों में हिंदी का विकास हुआ या नहीं, अंग्रेजी अवश्य प्रबल रूप से आगे बढ़ी है। इन क्षेत्रों में लाखों की तादाद में अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय स्थापित हो गए हैं। आज छोटे से छोटा आदमी भी चाहे वह दुकानदार हो या शिक्षक, मजदूर हो या किसान अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में ही पढ़ाना चाहता है, क्योंकि वह उच्च सरकारी नौकरियों की दौड़ में अपने बच्चों को नहीं रखना चाहता। यह इन राज्यों में हिंदी की दुर्दशा का प्रबल प्रमाण है। देवपुरा जी जीवन भर हिंदी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहे।

हिंदी आज अपने विकास के जिस दौर से गुजर रही है वह उत्साहित करने वाला है। अपने देश में ही नहीं, देश के बाहर भी हिंदी लहर रही है। भारत को अच्छे ढंग से जानने के लिए दुनिया के करीब 115 शिक्षण संस्थानों में हिंदी का अध्ययन हो रहा है। अमेरिका में 32 विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। ब्रिटेन की लंदन, कैम्ब्रिज ओर सार्क विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनेस है। वहाँ कई संगठन हिंदी के प्रचार का काम कर रहे हैं। हॉलैंड के चार विश्वविद्यालयों में 1930 से इसे प्रमुख विषय के रूप में अपनाया गया है। चीन में 1942 में हिंदी अध्ययन का आरंभ हुआ और 1957 में हिंदी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरंभ हुआ। हिंदी में ऑस्ट्रेलिया की निष्ठा इससे पता चलती है कि वहाँ छात्रों के लिए हिंदी में वेबसाइट विकसित की गई है। कैंब्रिज ओर न्यूयार्क सहित दुनिया के करीब 130 विश्वविद्यालयों में हिंदी की शिक्षा दी जाती है।

नेपाल में माध्यमिक स्तर पर हिंदी ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। भूटान के पाँच स्कूलों में हिंदी के पठन-पाठन की व्यवस्था है।

अब तो देश भर के तकनीकी एवं व्यावसायिक विश्वविद्यालयों में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने वाली है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के ताजा फैसले के बाद 2017 तक देश के तमाम विश्वविद्यालयों को कम से कम स्नातक स्तर तक हिंदी का अध्ययन शुरू करना होगा और इसके लिए सुनियोजित ढंग से हिंदी विभाग की भी स्थापना करनी होगी। यह भी हिंदी के पक्ष में एक उत्साहजनक आरम्भ दिखाई देता है।

हिंदी दिवस के बहिष्कार की बात बहुत लोग करते दिखाई-सुनाई देते हैं। योगेंद्र यादव, जो आम आदमी पार्टी के राजनीतिक मामलों की शीर्ष समिति और राष्ट्रीय कार्यकरिणी के सदस्य हैं, 14 सितंबर को भारतीय भाषा संकल्प दिवस के रूप में मनाने की बात कहते है कि इस अवसर पर सभी भारतीय भाषाएँ एकजुट होकर अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष करने का संकल्प लें और यह संकल्प नवनिर्माण से होगा। वे कहते हैं कि जैसे मिस्त्रियों ने हर कलपुर्जे के लिए अपनी हिंदी (प्लस, चिमटी, गर्म/ठंडा तार आदि) गढ़ ली है, उसी तरह अर्थव्यवस्था, कानून, डॉक्टरी ओर खगोलशास्त्र के लिए भी नई भाषा गढ़नी होगी। अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान के असीम भंडार का अनुवाद करना होगा। बिल्कुल ऐसी ही बात "माँ हिंदी की गौरव चिंता में" पुस्तक के लेखक बाबूराम वर्मा ने भी कही है--" हम अपनी हिंदी भाषा को बिना दाएँ-बाएँ देखे एकनिष्ठ होकर उन्नत बनाते चले जाएँ ताकि वह हमारे सभी कार्यों को पूरा करने में समर्थ हो जाए। दुनिया में कोई ऐसी जानकारी न हो जिसे हम जानना चाहें और वह हमें हिंदी में न मिले। सभी भाषाएँ निरन्तर वर्धमान और अच्छा-अच्छा साहित्य रचती जा रही हैं। वास्तव में अच्छा और उपयोगी जो भी हो, कहीं भी हो उसको हमें हिंदी में लाना ही चाहिए। अंग्रेजी ही नहीं सभी विश्व भाषाओं से हमें अपने उपयोग की सामग्री हिंदी में लानी ही होगी।"

हिंदी का क्या हो रहा है, हिंदी में क्या हो रहा है--इस पर व्यर्थ की बहस करने से अच्छा है कि हम अपनी भाषा, अपने देश पर स्वाभिमान करना सीखें। अपनी भाषा को इतना उन्नत बनाएँ कि विश्व की कोई भी जानकारी हमें हिंदी में मिल सके। हर व्यक्ति यह सोचे कि वह हिंदी के लिए क्या कर रहा है और जो कर रहा है क्या उतना ही पर्याप्त है या और परिश्रम करने की आवश्यकता है और इससे भी बढ़कर सबसे पहले स्वयं अपनी भाषा का आदर करें, उसे महत्व और सम्मान दें।

आज फ़ेसबुक ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले रचनाकारों को अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए पत्र-पत्रिकाओं का मुँह देखना पड़ता था, पर अब फ़ेसबुक पर अपना अकाउंट बना कर उस पर रचनाकार नित नई रचनाएँ पोस्ट करते हैं,

जिस पर उन्हें तुरंत प्रतिक्रियाएँ भी मिलती हैं। पढ़ना-पढ़ाना, सुधार सब साथ-साथ चलता है। फ़ेसबुक पर कई साहित्यिक समूह जैसे--कविता लोक, रचनाएँ-आपके अंतर्मन की, साहित्य नेक्स्ट, निरंतर, किताबें झाँकती हैं, आध्यात्मिक संस्था काव्यधारा, निरंतर प्रवाह, साहित्यकार संसद, आंनद साहित्य पीडिया, विश्व हिंदी संस्थान कनाडा, साहित्य अमृत, अटूट बंधन आदि सक्रिय हैं जिनसे रचनाकार जुड़े हुए है और उनमें सक्रिय सहयोग कर रहे हैं। इसी तरह व्हाट्सएप पर भी कई साहित्यिक समूह बने हुए है जैसे--निर्झरिणी, काव्य-अमृतम, काव्यगंगा, **अंतरा-शब्दशक्ति,** भारत की हिंदी

कवयित्रियाँ आदि बहुत सारे समूह है जो अपने नीति-नियमों के अनुसार रचनाकारों को जोड़ कर, उनकी साहित्यिक प्रतिभा को निखारने और हिंदी को आगे बढ़ाने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं जिसे अनदेखा करना असंभव है। लिखने और पढ़ने वाले युवा रचनाकारों की एक नई पीढ़ी इससे तैयार हो रही है। इन पर बाकायदा विषय देकर चर्चाएँ भी होती हैं, रचनाएँ पोस्ट होती हैं, समीक्षाएँ भी होती हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार में फ़ेसबुक के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। भविष्य में इस योगदान को अवश्य हिंदी साहित्य के इतिहास में अंकित किया जाएगा।

व्हाट्सएप पर भी लोग हिंदी में एक-दूसरे को संदेश भेजते हैं, अपनी रुचि की सामग्री का आदान-प्रदान करते हैं..इसने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया है। इंटरनेट के प्रयोग ने जानकारी प्राप्त करना सुलभ बना दिया है। 75 फीसदी लोग मोबाइल के द्वारा इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। "इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ इंडिया" संस्था ने 2012 में पाया था कि 37 प्रतिशत से अधिक भारतीय अंग्रेजी के मुकाबले अपनी भाषा में उपलब्ध कंटेंट को प्राथमिकता देते हैं। इसी कारण गूगल जैसी अंतर्राष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पाद हिंदी में उपलब्ध कराती हैं और स्नैपडील या फ्लिपकार्ट जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपनी वेबसाइट हिंदी में भी लांच कर चुके हैं। विकसित सहचर माध्यमों की वजह से हिंदी के टूल्स मोबाइल कंप्यूटर पर उपलब्ध हैं जिनकी मदद से हिंदी में आसानी से इन पर लिखा जा सकता है। सोशल साइट्स से समकालीन, वरिष्ठ रचनाकारों से परिचित होने और जुड़ने का अवसर मिलता है।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के सेवानिवृत्त निदेशक प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने अपने आलेख में हिंदी की विश्व व्यापी लोकप्रियता के कारणों को बताते हुए अपना अभिमत दिया है कि हिंदी फिल्मों, गानों, टी वी कार्यक्रम ने हिंदी को कितना लोकप्रिय बनाया है इसका आकलन करना मुश्किल है। केंद्रीय हिंदी संस्थान में हिंदी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इसकी पुष्टि की कि हिंदी फिल्मों को देख कर, हिंदी फिल्मों के गानों को सुनकर उन्हें हिंदी सीखने में मदद मिली। टी वी सीरियलों में पत्रों के रखे गए हिंदी नाम--प्रथम, वंश, अंश, नैतिक, अक्षरा, शिखर, दर्पण, सुरीली, तन्मय, कण्व, भूमि, कहर, उन्नति, नियम, सलोनी, धरा, नियति, अवनी, सक्षम, रोली, तन्वी, रक्षित, शुद्ध आदि और बहिन जाने कितने शब्द लोगों के दिलों में सुनते-देखते इस तरह रच-बस गए कि अपने बच्चों के नाम भी लोगों ने ऐसे रखने शुरू किए। ये कठिन लगने वाले शब्द आम जन के जीवन में सहज ही बस गए। टी वी कार्यक्रमों की बात हो तो अमिताभ बच्चन द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले कर्यक्रम " कौन बनेगा करोड़पति " को छोड़ा नहीं जा सकता। हिंदी बोलने में अमिताभ बच्चन एक आदर्श की तरह हैं। कर्यक्रम में उनकी हिंदी की प्रस्तुतु दर्शनीय होती है। एक-एक वाक्य सटीक, स्पष्ट और मजबूत। हिंदी की अद्भुत सहचर क्षमता में गहन आत्मविश्वास के बिना ऐसी हिंदी नहीं बोली जा सकती। उनकी साहित्यिक जीवंत हिंदी सुनने के लिए ही लोग ठीक साढ़े आठ बजे टी वी खोल कर बैठ जाते हैं। निश्चित ही इस कार्यक्रम ने हिंदी को और साथ ही टी वी कार्यक्रमों को एक गरिमा प्रदान की है।

हिंदी वेब की भाषा बन गई है। भारत ने हिंदी में वेबसाइटे डोमेन लांच करके कंप्यूटर पर अंग्रेजी की बाध्यता को समाप्त कर दिया। अब हिंदी में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले अब उन वेबसाइट का यू आर हिंदी में लिख सकेंगे जी डॉट भारत के साथ रजिस्टर की जाएगी। ब्लॉग हो या सोशल मीडिया, सब जगह हिंदी दिखती है। याहू, गूगल, एम एस एन जैसे बड़े सर्च इंजन हिंदी में आ रहे हैं। गूगल के चेयरमैन एरिक स्मिट की बात यदि हम मानें तो आने वाले पाँच से दस वर्ष के अंदर भारत दुनिया का सबसे बड़ा इंटरनेट बाज़ार बनेगा।

वैश्विक भाषा बनने की ओर बढ़ते हिंदी के कदम अब रुकने। वाले नहीं हैं। यहां तक कि कंपनियाँ अपने उत्पादों के एड की पंच लाइन में हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं क्योंकि ग्राहक उससे अपने को आसानी से जोड़ लेता है। जैसे--डेयरी मिल्क--कुछ मीठा हो जाए, हीरो होंडा--देश की धड़कन, एशियाई पैंट्स--हर घर कुछ कहता है, रोटोमैक--लिखते-लिखते लव हो जाए, टाटा नमक--देश का नमक आदि।

हिंदी को विश्व में सम्मानीय दर्जा प्राप्त है इसका अंदाजा ही इस बात से आसानी से लगा सकते हैं कि अंग्रेजी के शब्दकोश ऑक्स ओर मैकमिलन ने हिंदी के कई शब्दों को लिया है जिसमें भारतीय व्यंजनों, फैशन ओर परंपरागत भारतीय श्रृंगार के शब्द भी हैं।

जिस तरह से हिंदी अपना पथ प्रशस्त करते हुए आगे बढ़ती जा रही है तो अब उसे रोकना कठिन है। हम सब हिंदी को अपने जीवन, मन और कर्म का अभिन्न अंग बनाएँ। भावों को अभिव्यक्ति दें, सपनों को उड़ान दें, अपनेपन का मन दें, प्रेम का गान दें, इसके साथ जिएँ अपने जीवन के सब पलों को और इसके साथ ही लें अपने जीवन का अंतिम श्वास। अपनी माँ हिंदी यही तो चाहती है अपनी संतानों से।

अब हिंदी को हमसे यह नहीं पूछना पड़ेगा---

"कौन मुझे आगे ले जाए
कंटक चुन-चुन राह बुहारे
उच्च शिखर चढ़ने को आतुर
हिंदी अपने पंख पसारे
अपने पथ पर जूझ रही है
प्रश्न सभी से पूछ रही है
मेरी इस प्रगति यात्रा में
क्या तुम मेरे सँग चलोगे
कहीं गिरी, अटकी, फँसी तो
क्या तुम मेरी बाँह गहोगे?

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

"बलात्कार " कायरता पूर्ण घृणित सोच या बीमारी

आलोक कुमार सिंगरौल

कहा जाता है जिस तरह हर सिक्के के दो पहलू होते है ठीक उसी तरह हर व्यक्ति व समाज के भी दो पहलु होते है ।एक होता है अच्छा पहलु दूसरा होता है बुरा जो इंसानियत व सभ्यता की चादर ओढ़े हुए बुरे पहलु के अंदर बड़ी ही सफाई के साथ छुपा होता है ।
बलात्कार इस सभ्य व सज्जन समाज का वही एक बुरा पहलु है ,वही समाज जो अपने सभ्य होने की बाते करता है न्याय प्रिय होने की बाते करता है और एक दिन इसी सभ्य समाज में से किसी सभ्य व्यक्ति के अंदर का दानव जागृत होता है व बलात्कार जैसे घृणित कृत्य को अंजाम देता है ।बलात्कार करने वाला व्यक्ति इस सभ्य समाज में इस तरह घुल मिल कर रहता है जैसे किसी जल में शक्कर को घोल दिया जाए तो उसे अलग करना मुश्किल होता है ठीक उसी तरह वो भी समाज में ऐसे घुल मिल जाता है कि उसे पहचानना मुश्किल होता है ।
हमारा भारत देश वह देश है जहाँ पर बलात्कार होता है तो बलात्कारी की कायरतापूर्ण घृणित सोच को नही बल्कि लड़कियों के पहनावे को जिम्मेदार ठहराया जाता है।
बलात्कारी के पुनः जीवन यापन के लिए सरकारों द्वारा प्रयास किये जाते है ,मुझे समझ में नहीं आता क्यों? हम उनसे सभ्यता की आसा करते है जिनकी नजर हवस से भरी हुई है।
एक बलात्कारी व्यक्ति न तो 5 महीने की मासूम नवजात बच्ची को देखता है न 20 वर्ष की युवा न ही 60 वर्ष की दादी माँ ।वह बस उन्हें अपने उपभोग की वस्तु समझता है। उस 5 माह के मासूम की क्या गलती होती है जो वह हवस का शिकार हो जाती है ,सायद उसकी यही गलती होती है कि वह इस निर्दयी समाज में जन्म ले लेती है जो की असलियत में एक ढपोल संख मात्र है ।

बलात्कार सिर्फ एक घृणित सोच का परिणाम नहीं तो फ़िर क्या है ये ? ये एक बिमारी है ,और यह एक इतनी खतरनाक बीमारी है जिसका समय रहते इलाज न किया गया तो यह इतनी ज्यादा बढ़ जायेगी की समाज में किसी भी उम्र की महिलाएं सुरक्षित नहीं रहेंगी।इस बीमारी को आप और हम जैसे सभ्य लोग ही बढ़ावा देते है , हम छोटी छोटी हरकतों को नजरअंदाज करते है जिससे एक दिन यह विसाल व भयावह रूप ले लेती है ।

यह हमारे देश की विडंबना है कि जब भी कोई बलात्कार का केस आता है हम 4 दिन सोशल साइट पे रोष प्रकट करते है और फिर सब अपने अपने काम मे लग जाते है ,किसी को कोई परवाह नही होती कि क्या हुआ ,क्यों हुआ ,किस लिए हुए ,असल बात तो ये है कि हम सिर्फ सभ्य होने का दिखावा करते है सभ्य नही है।

सोने की चिड़िया कहे जाने वाले देश को आज बलात्कारियो का देश कहा जाता है इससे ज्यादा शर्म की बात क्या होगी हमारे लिए।

क्या है इस बीमारी का इलाज ? फाँसी ! उम्र कैद! या उसके नाबालिक होने पर उसके पुनर्वास के प्रयास किये जाना ताकि वह उसी विचारधारा से आगे फलता फूलता रहे ,या फिर ऐसी कोई सजा जो सदियों तक समाज याद रखे ! पर वो सजा होगी क्या ? क्या हमारा संविधान इसकी इजाजत देगा ? यह प्रश्न मैं छोड़ कर जा रहा लेकिन आप सब इस इस बात पर विचार जरूर करे । क्यों की आज कोई लड़की उनका शिकार हुई है और आज उन्हें खुला छोड़ दिया गया तो हो सकता है कल आपके घर की कोई सदस्य इसका शिकार हो ।ये सब हो इससे पहले ही क्यों न सम्हल जाए हम और आप ।

नाम-आलोक कुमार सिंगरौल
स्थान-भोपाल आलोक

सफ़र जो ठहर गया स्मृतियों में : पवन अरोड़ा

कहा जाता है कि फेसबुक महज़ छलावा है, आभासी संसार जिसमें न कोई अपना न रिश्ते न प्यार !!
यदि यह सच है तब यह भी उतना ही सच है कि जिस तरह पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होतीं, जिस तरह हर देखी हुई बात सच नहीं होती, उसी तरह रिश्ते सिर्फ खून के ही हों, जरूरी नहीं है।
अपवाद हर जगह होते हैं, फेसबुक कैसे अछूती रहती इस बात से।
मेरा संस्मरण जुड़ा हुआ है एक यात्रा से, यात्रा जहाँ से शुरू हुई है वह जगह है नई दिल्ली का रेल्वे स्टेशन परन्तु यह पूरा सच नहीं है।
यह यात्रा शुरू हुई थी कुछ मुलाकातों में, कुछ दोस्तों से किये वादों में और इस सोशल मीडिया की आभासी दुनिया में पनप रहे सच्चे रिश्तों में।
साहित्यिक अभिरुचि के चलते दिल्ली में विभिन्न प्रकाशनों के विमोचन अथवा सम्मान समारोहों में, पुस्तक मेलों में जाना होता है।
यह आयोजन वास्तव में साहित्यिक महाकुंभ हैं जहाँ भारत के कोने कोने से मित्रगण आते हैं।
दिल्ली के नामचीन लेखक शब्द मसीहा जी या भाषा भाव निर्झरी के नाम से विख्यात भाई केदारनाथ जी के साथ मध्यप्रदेश के अनेक मित्रों के साथ मेलमिलाप बढ़ रहा था तथा हर मुलाकात में मित्रवत आग्रह रहता एक बार मध्यप्रदेश आने का।
यही थी वास्तविक शुरुआत इस यात्रा की जिसे मै पवन अरोड़ा स्मृतियों में संजोकर साझा कर रहा हूँ आपके साथ।

पहला दिन

18/8/2017 दिन शुक्रवार

सफर शुरू हुआ केदार नाथ शब्द मसीहा जी के संग दिन शुक्रवार दिनाँक 18/8/17 शाम 8.10 को मालवा एक्सप्रेस दिल्ली से सीहोर के लिए।
A-1 के कोच में बैठते चर्चा शुरू और मुकेश दुबे भाई जी को अवगत करवा की चल पड़े सीहोर की राह यहाँ दिल्ली से हम।
जाते वक़्त अजीब सा लग रहा था मुकेश भैया के घर ठहरना क्योंकि किसी भी मित्र या रिश्तेदार के यहां बचपन के बाद घर जा ठहरा नही कभी
मगर मुकेश भाई जी का दवाब प्यार को देख चाह कर मना न कर सका क्योंकि शब्द मसीहा भाई जी ने साथ न दिया उन्होंने पहले ही स्वीकृति दे दी भैया को घर रुकने की, मैं अकेला कब तक मना करता हथियार डाल दिये मुकेश भाई के स्नेह व बड़पन के आगे।
गाड़ी अपना सफर तय करती भोपाल पहुंची अगले दिन सुबह।

दूसरा दिन

19/8/2017 शनिवार

--

भोपाल रेलवे स्टेशन पर 5 मिनट की एक मुलाकात कालेज के एक मित्र सुनील शर्मा से हुई वह रेलवे स्टेशन पर मिलने आ गया। अच्छा लगा यार से मिल उसे देख उनसे मुलाकात के बाद आगे का सफर 45 मिनट का था जब सीहोर का

गाड़ी की एक बार और ब्रेक लगी सीहोर आ गया ट्रेन से उतरते देखा मुकेश भाई ड्राइवर सहित हमे स्टेशन पर लेने आये

जो अहसास उनके दिल से मिला जो चेहरे पर मुस्कान तैरते देखी जो गले लग दिलो की धड़कने सुनी उसका चित्रण या वर्णन करना सहज नही आँखें नम हो जाती हैं सोचकर।

कुछ दूर सफर तय करने के बाद एक कोठीनुमा बंगले के आगे कार से उतर भाभी माँ , मुकेश जी के पिताजी,बड़े भाई,बिटिया ,बेटे से मिल हम ऊपर आये और तीसरी मंजिल पर हम दो भाइयों केदार जी व मैं कर बैठे।

कमरे में मुकेश भाई जी भाभी जी और दोनों बच्चों की एक सुंदर सी बड़ी तस्वीर लगी हुई जो कमरे की सुंदरता बढ़ा रही थी।

हाँ सीढ़ियों पर चढ़ते देखा उस सीढ़ियों में गहरा लाल रंग और दीवारों पर हरा रंग किसी का भी मन मोह ले।

मौसम सुहाना हुआ जा रहा था एकाएक जोर से वर्षा के संग मोर,पंछियों की कल्हाहट ने मंत्र मुग्ध कर दिया।

बाहर आँगन में झूले पर बैठ वर्षा का आनन्द ले हम बतियाने लगे

भाभी माँ के अपने हाथों का बनाया नाश्ता जिसमे जलेबी,समोसे,दालों का ढोकला परोसा गया और सब खाया हमने यह नाश्ता दिल्ली शहर में अब कौन कहाँ करता कुछ अलग नही बहुत अलग था, स्वादिष्ट जिसे देखते ही मन खुश और आंखे हैरान हुई अरे कितनी मेहनत की भाभी जी ने,

यह सिर्फ कोई अपना ही अपने के लिए करता हो वह भी मुश्किल से या यूँ कहूँ शायद करता न करता मगर यहाँ था।

सुबह से बादल बरस जब कुछ थक गये तो शांत हो चल दिये

इस बीच मेरी आँखों मे मुझे कुछ परेशानी सी लगी मैंने पानी की छींटे मार आंखों को दो से तीन बार धोया मुकेश भाई और भाषा भाव निर्झरी भाई बोले अरे तुम्हारी आंख तो लाल हो गई।

मुकेश भाई जल्द से नीचे फ्लोर पर जा कर गुलाब जल व एक और आंखों में डालने वाली दवा ले आये जिसे डाल कुछ राहत तो मिली मगर पूर्ण आराम नही

आंखों की दवा लेने व मुकेश भाई जी के कहने पर हम वहाँ पास में गणेशजी मन्दिर चल पड़े इस मंदिर की विशेषता गणपति जी को राजा पेशवा द्वारा एक जगह से अपने महल ले जाते वक्त राह में शिविर लगा उन्हें रखे जाने से जब सुबह देखा तो गणेश जी की मूर्ति का कुछ हिस्सा जमीन में धंस गया जो आज तक

है और उन्हें पुनः बहुत कोशिशों के बाद नही उठाया जा सका तो राजपुरोहित को बुलाया गया तो उनके कहे अनुसार गणपति जी का वही मन्दिर बना उन्हें स्थापित कर किया गया। गणपति मन्दिर की यह मान्यता है कि मन्दिर की पिछली दीवार पर आप उल्टी दिशा में स्वास्तिक बनाये और अपनी कोई मंगत माने तो वह अवश्य पूरी होती है जिसे वहां एक बार फिर दर्शन हेतु आ वह भक्त पुनः से सीधा स्वास्तिक बना अपनी हाज़री लगाते हैं।

वहाँ हमने तीन बार मन्दिर के चारो और परिक्रमा की व प्रसाद ले मत्था टेक बाहर निकल गाड़ी में बैठ चल पड़े।

रास्ते मे चारो और सुंदर हरियाली पसरी देख मन कहाँ माना मेरे कहने पर सब नीचे उतर गए व दो चार फोटो खींच स्मृति को स्थाई कर लिया।

इसके पश्चात हम खड़े हनुमान जी के दर्शन करने चल पड़े जो कुछ दूरी पर थे इस रास्ते मे मुकेश भाई जी जिस स्कूल में पढ़े लिखे उसे भी बाहर से हमे दिखाया।

खड़े हनुमान जी के मंदिर जाने का रास्ता पुरानी दिल्ली की तंग गलियों में से निकलने जैसा था।

हनुमान जी के मंदिर का बाहरी द्वार खुला था मगर अंदर मन्दिर में भगवान हनुमान जी के आगे चैनल ग्रिल लगी तो थी पर आप आराम से दर्शन कर सकते थे,

हमने दर्शन कर वहां भी कुछ फोटो लिए और अब आगे बढे दवा लेने के लिए, क्योंकि आँख में तकलीफ हो रही थी। साथ ही आते वक्त पान लिए जो मुझे बेहद पसंद है दिन में एक पान खाने की आदत जो ठहरी।

घर पहुँचने पर भाभी माँ खाना बना इंतज़ार कर रही थीं, समय भी अधिक हो गया था।

हम नीचे डाइनिंग रूम में बैठ खाना खाने लगे। इतने व्यंजन

सब्जी, पुलाव, दाल, खीर, पनीर,सलाद।

शाम चाय पी व रात 8 बजे से मस्ती के दो दो पैमाने टकराने के बाद खाने का कार्यक्रम रिजॉर्ट में तय हुआ। क्रीसेन्ट रिसॉर्ट के मालिक जो मुकेश भाई के मित्र तथा स्थानीय विधायक भी हैं , आकर हम सभी का आत्मीयता से अभिन्दन किया।

खाना बेहद लजीज था खाने के बाद सवारी घर की और निकल पड़ी व रात 10.30 पर बिस्तर पर आते सपनो को कैद करने को नींद की चादर ओढ़ हम सपनो में खो गए, मगर यह क्या 3.23 पर आँखों ने अपने किवाड़ खोल लिए देखा भाषा भाव निर्झरी भाई जी सपनो में खोये हैं और खर्राटों की गाड़ी पूरी रफ्तार से दौड़ रही है। मेरी नींद का एक्सीडेंट हो गया और नींद को गहरी चोट लगी, मेरा करवटें बदलने का वक़्त था अब किसी की यादों में..

एक गीत यकायक दिमाग मे घूम आया.... याद में तेरी जाग जाग कर हम 3.23 से सुबह 6 बजे तक करवटे बदलते रहे। इधर केदार भाई के खर्राटे स्वच्छंद विचरते रहे।

तीसरा दिन

20/8/2017 रविवार

भोर 6 बजे करीब जब में वाशरूम से कमरे में आया देखा केदार भाई तपस्या मतलब ध्यान लगा बैठे हुए

हैं। सुबह की राम राम हूई उनसे। कुछ देर बातें कर वह यह कह नहाने चले गए कि प्रीति के आने का समय होने वाला है, मैं फटाफट तैयार हो जाता हूँ।
कुछ देर बाद वह नहाकर कमरे में आये तो मैं नहाने चला गया। नहाकर जैसे कमरे में आया तब तक मुकेश भाई जी भी आ चुके थे। अब चाय का समय हो गया था, चाय पी फिर प्रीति सुराणा को लाने की प्लानिंग होने लगी जो कल रात बस में बालाघाट से बैठ 500 किलोमीटर का थकान भरा सफर तय कर, तबियत ठीक न होने पर भी हम लोगो से मिलने आ रही है। आज के पूर्ण दिन के कार्यक्रम पर चर्चा होने लगी बीच बीच मे प्रीति को फोन कर उसके आने का वक़्त उसे रिसीव करने की जगह तय की जाती रही। मुकेश भाई ने उन्हें समझाया की किस जगह उतरना है।
अब आज का ड्राइवर मै बना।
सुबह प्रीति को लेने मुकेश भाई व मैं निकलने लगे तो केदार भाई बोले मैं भी चलता हूँ जिन्हें मैंने मना कर दिया, आप यही बैठ इंतज़ार करे हम ले आते हैं।
गाड़ी स्टार्ट कर हम दोनों भाई निकल पड़े।
10 मिनट में ही उस स्थान पर पहूंच गए मगर यह क्या, जिस जगह हमने कहा था वहाँ प्रीति की बस का ड्राइवर उतारने को तैयार नहीं हो रहा था। प्रीति ने फोन पर बतलाया तो हम कुछ किलोमीटर और तय कर टोल प्लाजा पहूंच गए।
वहाँ पहूंच प्रीति को फिर फोन किया, उसने कहा वर्मा ट्रेवल्स की बस 5 मिनट में पहूंच जाएगी।
हम रोड की एक साइड खड़े हो इंतज़ार कर रहे थे कि तभी एक तरफ से एक सज्जन वहाँ आ गये। मुकेश भाई को देखकर साफ़तौर पर लग गया कि उन्हें पहचान नहीं सके हैं मगर यहाँ मुकेश भाई जी की मिलने की अदाकारी देखते बनी।
एक लंबी मुस्कराहट चेहरे पर झट से ले आये कहीं से पकड़ कर।
दावे से कह सकता हूँ मैं मुकेश भाई में एक जबरदस्त कलाकार छुपा है। कमाल की अदाकारी थी। वह मुकेश भाई जी को पहचान गये थे।
मुकेश भाई अब भी नही पहचाने मगर महसूस ही नही होने दिया अंत तक।
टोल प्लाजा पर ही कुर्सी लगा कर उस अपरिचित - परिचित ने बैठने की व्यवस्था कर दी थी तभी दो बसे हमारे आगे से निकली।
एक श्रीनाथ ,एक वर्मा टूर एंड ट्रेवल्स की। मैंने मुकेश भाई से कहा देखो भाई जी यह एक बस वर्मा ट्रेवल की आ रही है, वह बोले नही प्रीति कह रही अभी वक़्त लगेगा मैं भी बैठ गया यह सुनकर।
कुछ मिनटों बाद प्रीति का फोन आया की वह टोल प्लाजा पार कर उसी जगह खड़ी है अब जिस जगह को हम पीछे छोड़ आये थे। फिर क्या मियां ! कसम भोपाल की, तुरन्त गाड़ी के पँजे पर पांव दबा दिया और भागे गाड़ी लेकर उस स्थान की और जहाँ से हम पहले इंतज़ार कर निकल चुके थे।
इस बीच जो सफर तय हमने किया उसके चारों और दूर दूर तक हरियाली देखते बनती थी, मन को उल्लास से भर रही थी।

प्रीति व उसका बेटा तन्मय रोड की साइड बेग ले खड़े दिख गये।
वहाँ पहुंच दोनों को गाड़ी में बैठाया और घर की ओर रवाना हुए।
तन्मय जो CA बनने की दूसरे साल की सीढ़ी चढ़ रहा है, देख हम दोनों का मन हर्षित हो गया।
रास्ते भर प्रीति से बातें होती रही। आज प्रीति चहक रही थी, रात भर की थकान न जाने कहाँ गायब हो गई थी। यह उसकी हिम्मत और प्यार ही था जो दर्द में भी मुस्करा रही थी।
अब गाड़ी घर के गेट के आगे रोकी प्रीति, मुकेश भाई व तन्मय तीनो कार से उतर घर मे प्रवेश कर गए। मैं भी कार को पार्क कर ऊपर पहली मंजिल पर चला गया।

भाभी माँ ने हम तीनो को भी प्रीति के संग दुबारा चाय का पूछा, मैंने मना किया मगर सबकी हाँ के आगे मुझे भी आधा कप चाय लेनी पीढ़ी।
तन्मय नहा धो फ्रेश होने चला गया। हम लोग यानि प्रीति, भाभी, मुकेश भाई जी तथा केदार भाई नें खूब बातें की और फिर ऊपर की मंजिल आ गए यह कहकर कि प्रीति तुम भी नहाकर तैयार हो जाओ।
प्रीति तैयार होकर ऊपर ही आ गई। हाथो में दो बैग थे, एक मुझे व एक केदार भाई जी को उपहार स्वरूप भेंट किया (जिसमे एक अत्यंत सुंदर सी लालटेन रूपी लैम्प, जेंट्स पर्स, पेन व बिस्किट का डब्बा था)।

आज के दिन की क्या गतिविधियाँ रहेंगी यह चर्चा चल रही थी तभी भाभी माँ सुबह का नाश्ता 'पोहा' बना ऊपर ही ले आईं।
यह क्या पोहे के साथ बेसन की सिवईयां देख हैरान हुआ मगर मालूम पड़ा यहाँ सब पोहे के ऊपर डाल मिक्स कर खाते हैं और यह मालवा में सेंव कहलाती हैं।
हमने भी लगे हाथ जैसा देश वैसा भेष अपना लिया और पोहे का सेंव के साथ आनन्द लिया।
नाश्ते के बीच तय हुआ कि मुकेश भाई की किताब "खिल उठे पलाश" का विमोचन किया जाये आज लोकजंग कार्यालय में।
अब शुरू हुई तलाश रेपिंग पेपर की। प्रीति जिस कागज़ में भाभी जी के लिए गिफ्ट लाई थी, बड़े एहतियात के साथ खोला गया। डर था कहीं फट न जाए।
अब तन्मय व दिशू (मुकेश भाई की बेटी) नें किताबों को अनावरण के लिए पैक किया।
नाश्ते के बाद भोपाल निकलने की जल्दी थी जिस से सभी मित्रों के संग संग जल्द से मुलाकात हो, व ज्यादा से ज्यादा समय मिल सके साथ रहने का।
अब एक बार फिर से नीचे पहली मंजिल पर आ गए।
यहाँ फोटो शूटिंग सैशन हुआ सभी के साथ क्योंकि प्रीति व तन्मय को दोपहर के कार्यक्रम में शामिल होने के पश्चात रात ही भोपाल से बालघाट लौट जाना था।
हम सब दोपहर सीहोर से भोपाल की और चल पड़े इस बीच प्रीति ने कुछ जरूर यादगार लम्हे सीहोर के तब तक संजो लिए थे। समझ सकता था मैं उस पगली, प्यारी सी लड़की के अहसासों को जो भावुकता से भरी

थी। कोमल जज्बात लिए हिम्मत रख हर परेशानी से लड़कर जीती भी थी।
आज भी स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाइयों से जूझते हुए आगे बढ़ रही है। सब से मुस्कराते हुए मिलती है। सच बताऊँ ऐसी लडक़ी अब कहाँ मिलती है।
प्रीति पहले फेसबुक पर मित्र के रूप में जुड़ी थी। व्हाट्सप ग्रुप 'गूंज' में हमारी दोस्ती और मजबूत हुई व विश्वास प्रगाढ़ हुआ। इसी दोस्ती विश्वास का फल तब मिला जब प्रीति मेरी और केदार भाई जी की '3 जुलाई 3 मित्र 3 पुस्तकें' के लोकार्पण में 3 जुलाई 2016 को सुदूर मध्यप्रदेश से 1300 किलोमीटर का सफर तय कर दिल्ली आई। बस इस मुलाकात ने जीत लिया दोस्त का विश्वास।
याद है मुझे जब प्रीति ने पिछले दिनों मेरी एक पोस्ट पर लिखा कि मुझसे मिलने कोई नहीं आता, यह बात प्रीति ने अपने स्वास्थ्य को लेकर कही थी जिसका मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था किन्तु मेरे से रहा नही गया।
मैंने जीवन मे पहली बार बिना पूछे किसी महिला मित्र को फोन किया कि वह ऐसे क्यों बोल रही है।
जब उससे बात हुई मालूम पड़ा तो सच जाने अब रूक नहीं सकता था।
वह उन दिनों कुछ निराश थी, मुझे पहली बार अच्छा नही लगा मैंने केदार भाई शब्द मसीहा जो आजकल भाषा भाव निर्झरी बन गये हैं, उनको काल किया और प्रीति से मिलने को चलने का कहा।
भोपाल मिलने की सबसे सुलभ जगह थी मगर हमारे मुकेश भाई जी ने सीधे घर आने को कहा जिसे मान लिया गया, हम सब एक साथ सीहोर एकत्रित हुए
जो सच कहूँ तो प्रीति के कारण ही था।
केदार भाई व मुकेश भाई प्रीति को छोटी बहन कहकर बुलाते हैं। मैं दोस्त को हर रिश्ते के ऊपर देखता हूँ और यह रिश्ता सर्वोपरि है मेरे लिए।
हम सीहोर से 20 किमी दूर आ गये थे। इस जगह अजीब सी बदबू आ रही थी।
कार के शीशे बन्द होने के बावजूद भी एक किलोमीटर तक बनी रही यह बदबू। दरअसल यह असहनीय दुर्गंध थी सड़ रहे प्याज़ की जिसे सरकार ने किसानों से मात्र दो रुपये प्रति किलो की दर से खरीदा था। आज सड़े गले प्याजों को ट्राली में भरता देख मध्यप्रदेश का सरकारी चेहरा हैरान कर रहा था।
अनगिनत ट्रालियाँ लगी थीं सड़े प्याज को उठाने के लिए।
दुख के साथ गुस्सा भी था
मगर क्या करते, बस देखते रहे मौन रहकर।
वह राह पार कर भोपाल के
वी आई पी रोड पर आ गए, जो शानदार था, खाली था मगर जगह जगह भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह जी के स्वागत के लिए लाखों रुपये खर्च कर फूलों व होर्डिंग - बैनरों से पटा हुआ था।
राजनीति दलों से कौन पूछे कैसे जनता का पैसा अपने आवभगत में खर्च करवा कर दुरुपयोग किया जाता है।

काफिला आज के आयोजन स्थल मोती मस्जिद के पास एलाइड कम्प्लेक्स के लोकजंग अखबार पहूँच गया था।
प्रीति ने काम्प्लेक्स के गेट के आगे गाड़ी पार्क करने को कहा क्योंकि रविवार होने से वहाँ के ऑफिस बन्द रहते हैं। हमने कार वहीं पर पार्क कर दिया और ऊपर द्वितीय तलाश पर आ गए।
ऑफिस में प्रवेश करते ही एक सफेद दाड़ी वाले आंखों पर चश्मा लगाए शारिरिक रूप से फिट 50 वर्षीय युवा ने मुस्कराते हूए गर्मजोशी से स्वागत किया।
यही थे सैफी भाई, सौम्य व्यक्तित्व के मालिक। आत्मीयता देख मुझे और केदार भाई को लगा ही नही की हम पहली बार इनसे मिल रहे हैं। मगर एक और भी कोई बैठा था
ऑफिस में सैफ़ी भाई जी के साथ जो कर रही थी इंतजार, वह थी कल्पना भट्ट जी जिन्हें मैं दूर तक नही जानता था। मगर कहते हैं न बात दूरियो की नहीं रहती जब इंसान मुस्कराते हूए अदब से आपको सम्मान से मिले।
अब प्रीति ,मुकेश भाई,कल्पना जी,सैफ़ी भाई की मीठी मीठी नोकझोक चालू होने के साथ
इंतज़ार था शेष साथियों का।
धीरे-धीरे सभी आने लगे।
मीनू पाण्डे जी अपने जीवन साथी प्रभात पाण्डे जी के साथ सबसे पहले आईं। हम पहले भी दिल्ली में रूपल जौहरी जी के सम्पादन में निकले काव्य संग्रह के विमोचन में मिल चुके थे।
अब आये मित्र मनोज जैन मधुर जी। उसके बाद कांता राय जी भी अपने जीवन साथी सत्यजीत राय जी के साथ पधार चुकी थीं।
इंतज़ार की घड़ियों को आसान बनाया सैफ़ी भाई के प्यार ने। उनके हाथों से बनी चाय पीने का लुत्फ लिया गया।
इसी बीच मेरे कालेज के सहपाठी Sunil Sharma जी अपने मित्र यादव जी के संग आये और आते ही बोले, पवन नीचे ग्रे रंग की एक आई 10 कार खड़ी है उसे उठाने के लिए पुलिस क्रेन मंगवा रही है।
कहीं तुम में से किसी की तो नहीं है।
मैंने कहा हमारी गाड़ी ग्रे कलर की तो है मगर आगे खड़ी है।
फिर भी कौन सी है देखने के लिए उस जगह देखा मैं हैरान रह गया। वह कार हमारी ही थी।
सैफी भाई व मैं नीचे कार की तरफ़ भागे।
कार एक काम्प्लेक्स के गेट के आगे खड़ी की थी प्रीति के कहने पर, काम्प्लेक्स में किसी ने पुलिस को फोन कर बुला रखा था क्योंकि अंदर उनकी गाड़ी खड़ी जो हमारी गाड़ी गेट के आगे खड़े होने से निकल नही सकती थी।
चलिये माफी माँग गाड़ी हटाकर एक पार्किंग स्थल पर खड़ा किया।
हमारे आने के पहले उन महाशय ने एक पहिये की हवा निकाल दी थी।
हवा भरवाने के लिए 1 किलामीटर का सफर तय करना पड़ा।

भला हो दोस्त सुनील शर्मा का जिसने इस आने वाली परेशानी से समय रहते अवगत करा ज्यादा परेशान नही होने दिया।
मगर वह खुद शाम का कार्यक्रम पूछ चल दिया कि समय निकाल फोन कर बताना की शाम को क्या करना है मगर हज़ूर कहाँ बताते....
क्योंकि आगमन हो गया था -
एक सफेद कुर्ता धारी
नाटा सा कद
गणपति से लिया पेट उधारी
मुहँ में पान
चश्मे से आंखों में जान
साहित्य का ज्ञान
सब दे रहे उसको सम्मान
बोलने में बिंदास
साठ पेंसठ के पास
बन गया पल भर में
दिलो की जान
यह कम है उनकी पहचान
मिलोगे तो बन जाओगे
उनके कद्रदान
अच्छे अच्छे अक्लमन्दों
खींच डालते तर्क दे कान
सही पहचाना आप सब ने वह थे ज्योति खरे भाई जान।
यूँ तो ज्योति खरे भाई जी मित्रो की सूची में शामिल भर थे
मगर सच कहूँ मिलते ही दिल में जगह बना ली पल भर में।

पान कौन कौन खायेगा सब से पूछा तब
मैं शौकीन कहाँ मना करता गर पान मेरी पसन्द का लगा होता।
दादा पान में क्या क्या लगा है बताओ
अरे पवन भाई पहले खा देखो फिर बताओ।

सुनो अब ज्योति दादा
मत पूछना दादा
पान का क्या स्वाद था
सच कहूँ तो

तुम्हारे पूछने का अंदाज़
पान से कहीं लाजवाब था।
बनारसी पता.... इतराता तब
नवरत्न चटनी से लिपटा पाता जब
नवरत्न कमाम लिए रगड़ा जाता
खुशबू मसाला डाला जाता
डाल बाबा इलाइची के कुछ दाने
भुनी सुपारी से महकाता।
छिटक देते चन्द सुपारी के लच्छे
खा जिसे में हवा में उड़ जाता
....
मगर हम जमीं पर बने रहे सच कहें भोपाल सीहोर पान के मामले अभी दिल्ली से मिलो पीछे रहे।
हँसी-ठिठौली के बीच पान खाने के बाद अब दौर शुरू हुआ मुकेश भाई जी की पुस्तक "खिल उठे पलाश" के विमोचन का।

ज्योति दादा ने सूत्रधार की भूमिका निभाई।
कमाल की भूमिका बांधी ज्योति दादा ने "पलाश के फूल"
को ले और लधुकथाओ को ले जिसे सुन सब मन्त्रमुग्ध हुए
"पलाश के फूल" के विमोचन के बाद केदार भाई भी
भूमिका सुन फिसल गये और झट से बोले
अरे ज्योति भाई जरा हमारी पुस्तक" ज़िन्दा है मन्टो" का भी पुनः विमोचन कर दो न।
लो जी आ गयी सबके हाथो में
दूसरी पुस्तक "ज़िन्दा है मन्टो"।
तीसरी पुस्तक मेरी लिखित काव्य संग्रह "सुनो एक बार तुम" रही।

इस तीनो पुस्तको के विमोचन को fb पर सीधा प्रसारण दिखाया गया जिसके कैमरामैन हम सब के भाई मीनू जी के जीवन साथी प्रभात पाण्डे जी थे, दिली आभार हम सब की तरफ से उनका।
तीनो पुस्तको के विमोचन के बाद अब दौर शुरू हुआ काव्य पाठ का। काव्य पाठ का मंच संचालन ज्योति खरे भाई जी ने किया।
संचालन लाजवाब , कमाल,गज़ब का था क्या पकड़ थी क्या रूहानियत थी क्या जोश था क्या काव्य पाठ

का वह एक दौर था जिसे सजाया महकाया भाषा भाव निर्झरी, कांता राय जी, मनोज मधुर जैन जी, प्रीति सुराना जी, कल्पना भट्ट जी, मीनू पाण्डे जी व आपके मित्र मैं पवन अरोड़ा द्वारा।

मनोज जैन मधुर जी के गीत, केदार भाई जी की लधुकथा व रचना, मुकेश भाई जी की लघुकथा व रचना, प्रीति जी की दो रचनाये , कांता राय जी की दो लघुकथायें, कल्पना भट्ट जी की लघुकथा व मीनू जी की रचनाएँ कमाल की थीं। ऊपर से सब को एक सूत्र में बांधे ज्योति खरे भाई जी।
एक एक कवि लेखक को ले जो भूमिका बांधी उनकी बोली लघुकथा, रचनाओ, गीतों के बारे में जो कहा गया, अद्भुत था।
इतने सफल आयोजन के लिए प्रीति जी सैफी जी मुकेश भाई जी के संग अब ज्योति खरे जी का सबसे बड़ा हाथ रहा।
काव्य पाठ खत्म होने पर कुछ देर बाद कुछ मित्र ने इजाजत चाही और चल दिये।
रह गए ज्योति भाई जो जिद किये बैठे अपने घर ले जाने के लिए और रात के भोजन साथ करने के लिए।

अरे क्या खाओगे बतलाओ सभी। और जो खम्बा कहोगे खोलेंगे क्योंकि अब मिले तो खम्बा खोलना तो बनता है।
ज्योति खरे भाई जी बोले
खम्बा सुन में हैरान हुआ।
खम्बा खोलना यह क्या ?
उन्होंने हाथो की भाषा और शरारती अंदाज़ से समझा दिया
अब मुस्कराहट चेहरे पर फिसल गई।
काफी मना करने के बाद ज्योति खरे भाई जी के प्यार के आगे हम तीनों चुप से घर जाने के लिए तैयार हो गए।
अब इंतज़ार था प्रीति (जो पर्व मे रात्रि भोजन न करने के नियम की वजह से नीचे नियम के हिसाब से कुछ मिल जाए सोचकर गई थी इसलिये उनका) व उनके बेटे तन्मय का,.. उनके आने के बाद उनसे कुछ और देर बातचीत कर सैफ़ी भाई जी से व तन्मय से चलने की इजाज़त ली।
प्रीति का बैग कार में था तो सब एलाइड कम्प्लेक्स से नीचे आये। प्रीति भावनाओ में बह अपने आंसू रोके न रोक पा रही थी, बिछड़ने का समय जो आ गया था।
सुबह से साथ बने हुए थे हँस रहे थे चहक रहे थे खिलखिला रहे थे
मगर अब कमजोर पड़ रहे थे उन लम्हो में।
कुछ संभल प्रीति व तन्मय और सैफी भाई जी विदाई ली गई।
अब कार का रूख ज्योति भाई जी की घर की तरफ की और किया ही था कि मोती मस्जिद के पास चौराहे पर शाम का जाम मिला।

जाम खुलते ही कार आगे चली थी की एक स्कूटर सवार ने बोला कि आप की गाड़ी से बहुत तेल गिर रहा है।
यह सुन चिंतित होना लाजमी था,
गाड़ी को एक साइड खड़ा किया गया और केदार भाई जी को कहा कि नीचे झुक मोबाइल की टार्च खोल देखें।
जब उन्होंने देखा तो वह बोले कुछ गिर तो रहा है। कार उस जगह से एक कदम और आगे खड़ी कर उन गिरी बूंदों को छूकर देखा तो केदार भाई भाषा भाव निर्झरी जी बोले यह तो पानी है।
मैंने मुकेश भाई जी की कहा एक बार गाड़ी दिखा लेते है क्योंकि बोनट खोल हमने जो देखा कुछ नज़र नहीं आ रहा था
बस यह लगा कि ब्रेक ऑयल नही है।
सैफी भाई जी को फोन कर मेकेनिक को साथ लाने के लिए बोला गया मगर सेफी भाई जी आये तो उन्होंने कहा हमे यहाँ से आगे जाना पड़ेगा।
गाड़ी उनके पीछे चलाते हुए पलाश होटल के पास मैकेनिक के पास पहुँचे।
मेकेनिक ने कार चेक की और कहा कि ac का पानी ही है जो निकलता रहता है फिर भी गाड़ी का ऑयल खराब है इसे बदलवा लें।
मुकेश भाई ने यही समझा कि हाँ कल सुबह सुबह निकलना है घूमने के लिए तो जो काम है उसे जल्द अभी करवा लिया जाए जिससे आगे परेशानी न हो।
अब वहाँ आधे घण्टे से ज्यादा वक्त लग गया रात के 8 बज गए।
मैंने और मुकेश भाई ने आपस में बातचीत की। ज्योति भाई का घर यहाँ से अभी भी दूर था और ट्रैफिक की वजह से एक घंटा लगता वहाँ पहुँचने में।
सोचा अब न जाया जाए। अगर गए तो हमे फिर रात के एक बजे से ऊपर का वक़्त हो जाएगा जो ठीक न होगा क्योंकि सुबह के सभी कार्यक्रम की रूपरेखा बिगड़ जाएगी।
यही बात हमने पहले केदार भाई जी को समझाई और उसके बाद ज्योति खरे भाई जी को कहा गया।
काफी न नुकर के बाद नाराजगी लिए वह कहना मान गए कि चलो अब यही सही तुम लोग सीहोर निकलो और मैं घर निकलता हूँ।
पलाश होटल से ऑटो कर वो निकल गए घर।
आज हम सब खम्बा न खोल सके न वह लम्हे संग जी सके।
सच जाने उन्हें मना कर यूँ नराज कर घर पर बने खाने को छोड़ अच्छा नही लगा रहा था।
वक़्त की मर्जी का अहसास हमको हो रहा था क्योंकि वक़्त ने धोखा जो दिया कार में खराबी आई।
रात बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। हम सीहोर के लिए चल पड़े थे।
रास्ते मे तीनो ने कुछ मस्ती तो की मगर मन आज कुछ खुश न था क्योंकि आज की शाम ज्योति भाई के नाम थी मगर ऐसा हो नहीं सका था।

ऐसे सोचते बतियाते हम फिर रिजॉर्ट पहुँच गए। वहाँ खाना खाकर रात दस बजे घर पहुंच जल्दी से बिस्तर पर पसर गए...क्योंकि सुबह जो जल्द निकलना था।

चौथा दिन

21/8/2017 सोमवार

कल रात जल्द सोने के बाद सुबह छः बजे बिस्तर से बाहर निकलना हुआ।

मोर की आवाज़ कानो में मधुर संगीत की तरह पड़ रही थी।

केदार भाई भाषा भाव निर्झरी जी और मै जल्द नहाकर बाबू बन तैयार हो गए थे।

मुकेश भाई जी सुबह सात बजे ऊपर आये आते ही सुपारी बॉक्स को हाथ मे ले सुपारी काटने लगे यह उनकी हर रोज की आदत जो थी।

कुछ देर बाद भाभी माँ चाय दे गईं।

चाय पीते पीते कार्यक्रम की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया जा रहा था।

8.30 पर हम सीहोर से साँची स्तूप व बौद्ध मंदिर देखने के लिए निकल पड़े।

गाड़ी की कमान मेरे हाथों थी। मतलब ड्राइवर, मैं पिछले दो दिनों की तरह आज भी ड्राइव कर रहा था।

कुछ तेज़ ड्राइविंग का लुत्फ लिया गया, एक सौ बीस से एक सौ तीस किलोमीटर की रफ्तार से हम जल्द ही साँची पहुँच गए।

केदार भाई ने टिकट ली व फिर गाड़ी पार्क कर हमने कुछ मस्ती भरी तस्वीरे फोन में उतारी।

मैं इन दोनों को जगह जगह पर जैसे कह रहा था, दोनों अच्छे बच्चे की तरह वैसे खड़े ,बैठ ,चुपचाप से फ़ोटो खिंचवा लेते।

हाँ केदार भाई कभी कभी स्टाइल मारने लगते ज़िद्दी बन जाते नही भाई मैं तो....?

चलो बच्चा है घूमने आए हैं, बुरा न मान जाये हम ज़िद्द पूरी कर देते थे।

सच कहूँ तो हम तीनों में से एक ही शरीफ बालक था जिस के सर पर चाँद पसरा पड़ा हुआ मुकेश भाई।

भोला सा प्यारा सा जहाँ कहो वैसा कर लेता था।

मैं बिगड़ा सीधा सा तुम्हारा सिर्फ तुम्हारा, समझे शोना, समझे बाबू.... कहाँ टेढ़ा चलता हूँ।

बस इन्हें देख शरारते करने को मन हो जाता और कर डालता यही सोच अब है तो जी ले।

साँची बुद्ध मन्दिर से हम जल्द एक घण्टे के भीतर सब देख निकल पड़े।

निकलते मुकेश भाई जी ने कहा जो नाश्ता करना है वह कर लें

मगर यहाँ तो भोपाल जाने की जल्दी थी।

सोच रहे थे कुछ और पर्यटक स्थल देखे जा सकें, आखिर आज ही का कुछ समय और बचा था वापस दिल्ली के लिए लौटना भी था।

हम भोपाल पहुचने से पहले सैफी भाई को फोन पर बातचीत कर अवगत करवाया गया मगर कमबख्त यह भी एक ज़िद्दी बच्चे से कम नही निकले।

कहने लगे ऊपर ऑफिस आओ चाय पीना मेरे हाथों की बनी तब चलेंगे।

सच्ची ज़िद्द बिरयानी खिलाने की नही की, बिरयानी की ज़िद करते मियां.......
मगर चलो पहली पहली बार मिले थे। बिरयानी ड्यू रही आगे के लिए।
11.30 हो गया था, सुबह नाश्ता भी नहीं किया था। भूख ने मनमानी करनी शुरू कर दी। सोचा अब इसे शांत कराने का वक़्त आ गया नही तो...मार ही डालेगी।
गाड़ी पार्क कर पार्किंग मे हम नीचे उतर भागे खाने के लिए कि कुछ खा लिया जाए।
ढूंढते ढूंढते हाजी साहब की दुकान में जा घुसे।
जो चाहते थे वह अभी बना नही शाम को बनेगी बिरयानी।
चलिये मियां, यह चिकेन कोरमा ही खिला दें।
मैंने तो वहाँ खाया और स्वाद पाया।
मगर केदार भाई ने कुछ न लिया तो अब उनके नाश्ते की खोज चालू की। कुछ कदम बढ़ने के बाद पटेल जी दुकान पर समोसे कचौड़ी तले बैठे मुस्करा रहे थे। उनकी मुस्कराहट पर दिल आ गया।
सुनो भाई दो कचौड़ी दो समोसे पैक कर दीजिए।
इसी बीच मेरी तिरछी नज़र भरी कटोरियों पर पड़ी यह क्या है ?
'जी खीर है।'
'वाह देना एक कटोरी।'
स्वाद है चम्मच भर खाते मुँह से निकला।
पहले जो दो शरीफ बच्चे मना कर रहे थे पानी आ गया हज़ूर...
खाने बैठ गए दुकान के भीतर।
फिर क्या दो कटोरी और ले ली,
पैसे दिए ही थे कि देखा शोकेस में हलवा हमसे मुहँ सुजा बैठा है। हमने उसका स्वाद पूछा ही नहीं।
अब मैं ठहरा भोला बाबा, दर्द हुआ सोचा गलत बात है।
सुनो यह भी एक प्लेट दे दो।
फिर ले ली घिये के हलवे की एक नन्ही प्लेट।
अब फिर पूछा दो शरीफ बच्चो से..
बच्चो का भी रटा रटाया जवाब न हम न खाएंगे।
मुँह में डालते फिर निकल वाह क्या स्वाद।
अब दोनों की फिर फिसल गई ज़ुबान।
मँगवाई जी घिये के हलवे की एक और प्लेट।
यह भी खाते बच्चे हुए नही लेट।
खाने के बाद पटेल जी से समोसे कचौड़ी ले विदा ली सैफी भाई के ऑफिस जाने के लिए।
वहाँ चाय पहले से हमारा इंतज़ार कर रही थी।
साथ मे एक मोहतरमा भी अच्छे से मुस्करा कर मिलीं। आप थीं पूजा शर्मा जी। नव्यानारी पत्रिका की

प्रधान संपादिका।
चाय पानी के बाद सैफी भाई को ले हम मतवाले निकल पड़े बोटिंग जो मुख्यमंत्री निवास के पीछे ही है।
वहाँ जा कर तो हम सीधे प्रसारण से जुड़े ही थे आपने सराहा प्यार दिया जिस पर हमें गुमाँ था व रहेगा।

इस तरह हम आज दो पर्यटक स्थल घूम कर सीहोर की और निकल पड़े और सीहोर पहुँच कुछ पल आराम कर खाना खाने बैठे।
तभी मुकेश भाई के बेटू ने मुकेश भाई से पूछा कहाँ गए थे तो मुकेश भाई जी ने कहा तुम्हारे चाचा संग भोपाल गये थे।
'क्या चंचल स्वीट गए थे ?'
उन्होंने मना किया।
वह कुछ नराज हुआ और मुकेश भाई ने उन्हें वादा किया जब अगली बार जाऊँगा तो पक्का लड्डू लाऊँगा।
हम्म.... चाचा को यह खिलाओ।
वहाँ पड़े एक मिठाई के डिब्बे की तरफ इशारा कर बोला।
सच कहूँ तो लड्डू तो जो स्वाद थे सो थे मगर उसके पूछने व कहने में इतना प्रेम था कि दिल जीत ले गया और मेरा दिल अब मेरे पास न रहा।
उसकी इस प्यार भरी बातो ने जो चुरा लिया।
सीहोर से हमारी वापिस दिल्ली की और ट्रेन 4.10 की थी। स्टेशन तक जैसे हमे लेने आये थे मुकेश भाई अपने कमल ड्राइवर के संग, वैसे छोड़ने भी आये और जब तक वापिस न लौटे जब तक ट्रेन में हम बैठ रवाना न हुए यह सोच की कहीं कमबख्त उतर फिर वापिस सीहोर न आ जायें।

यह रहा एक न भूलने वाला सफर
अपनो के साथ जिसके लिए मैं शुक्रगुज़ार हूँ मुकेश भाई भाभी माँ घर के सभी सदस्यों के संग प्रीति, सैफी भाई जी,ज्योति भाई जी,मनोज जैन जी,कल्पना भट्ट जी,मीनू पांडे प्रभात पांडे जी,कांता राय जी सत्यजीत राय जी व अपने कॉलेज सहपाठी सुनील शर्मा जी का जिन्होंने इस भ्रमण को एक यादगार साँचे में ढाल मुझे दिया।

-- पवन अरोड़ा , नई दिल्ली

पुस्तक समीक्षा : आसमानी आँखों का मौसम

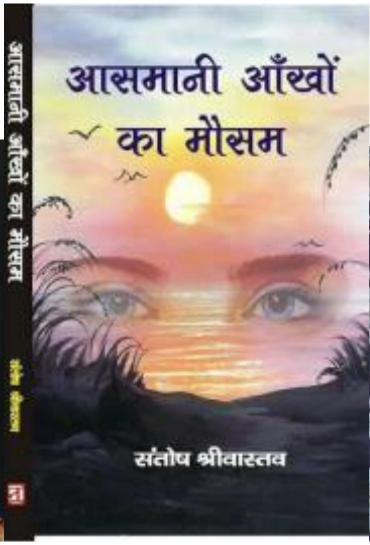

लेखिका : संतोष श्रीवास्तव **आसमानी आँखों का मौसम** **समीक्षक : मुकेश दुबे**

कहानी एक विधा भर नहीं है साहित्य की। यह तो ज़िंदगी की रवानी में थाम लिए उन खूबसूरत जज्बातों और लम्हों की झलक है जिसमें अलग अलग भावनाएँ अपनी अलग-अलग पहचान के साथ मौजूद रहती हैं। कभी दर्द महकने लगता है फूल बनकर तो कभी प्यार का दरिया बह निकलता है तटबन्ध की परवाह किये बगैर। कहीं मन पर उदासी बादल बन छ जाती है तो कभी आनंद की पराकाष्ठ सावन की फुहारों की तरह अंतस को सराबोर कर जाती है। हर किस्सा एक नयी दुनियाँ होता है। अनगिनत रंग और रूप, भावनावों के सम्प्रेषण की ऐसी कला जिसमें मन का कैनवास कलम से बनी तस्वीर सा मुखर हो उठता है। किरदार सफ़ों से उठकर बतियाने लगते हैं, मजबूर कर देते हैं पाठक को अपने साथ चलने के लिए, अपने साथ हँसने और रोने के लिए।

मगर इसके लिए किस्सागोई भी उस धरातल पर रहनी जरुरी है जहाँ पाठक अब पाठक ना रहकर स्वयं एक श्रोता बन जाये, शब्द आँखों के रास्ते कान से होते हुवे मन के दर्पण पर प्रतिबिम्बित हो उठें...... दिखनें लगें, गूँजने लगें जैसे तपती रेत पर फुहार गिरकर दिखती नहीं लेकिन सामान जाती है अन्दर कहीं, अपने गिरने का एहसास करा जाती है।

आसन नहीं होता इतना शिद्दत से पढ़ी जाने वाली कथाओं का बुनना, बिरले ही किस्सागो होते हैं जो ऐसी कहानियों का सृजन कर पाते हैं।

ऐसा ही एक खूबसूरत नजराना है कलम की दुनियाँ में "आसमानी आँखों का मौसम" जिसे रचा है हिंदी साहित्य की मशहूर किस्सागो 'संतोष श्रीवास्तव' जी नें।

वक्त सरकता है, पन्ने पलटते जाते हैं मगर किस्सा बदस्तूर चलता जाता है। ख़ासकर उस पाठक के लिए जिसका बचपन बचपन दादी-नानी की गोद में कहानियां सुनकर जवान हुआ हो।
मुख्तलिफ़ बीस कहानियाँ हैं इस संग्रह में, कहने को यह बीस है मगर जीवन के अनगिनत रंग सिमट गए हैं इनमें, संघर्ष, अनुभूति, संचेतना, द्वन्द, आवेग, रूमानियत व रोमांस का अप्रितिम प्रस्तुतीकरण किया है संतोष जी नें अपने अनूठे अंदाज़ में।
हर कहानी एक नये अंदाज़ में जीवन की किसी हक़ीक़त को बयाँ करती महसूस होती है। कभी सुबह की अरुणाई तो कभी शाम के धुंधलके में सुनहरी किरणों को सुरमई अंधेरों में मिलाकर इन्द्रधनुषी छटा सा बिखेरती हुई कहानियां हैं यह। कभी शोख अल्हड़ सी कभी शांत, गुदगुदाती कभी आँखों में नमी महसूस कराती हुई वह दास्ताँ जो सच के धरातल पर कल्पनाओं का तिलिस्म बुनती हैं.....
शब्दों का ऐसा दरिया जिसमें उतारकर बीच में रुक पाना आसन नहीं, बस बहते जाईये, अंत में मिलेगा किनारा कहीं........
एक बात जिसने इन कहानियों को एक नये कलेवर में संजोया है वह है इनमें नारी की भावनाओं की अलग अभिव्यक्ति। हर स्त्री की भूमिका में किरदार कुछ कहता है, कभी पश्चाताप कभी अपराधबोध से भीगा हुआ, स्त्री विमर्श का यह रूप अतुलनीय है। कोई फंतासी नहीं, अतिरिक्त पच्चीकारी नहीं, सहज, सरल व स्वीकार्य अकाट्य सत्य का दर्शन है कथाओं में।
“सपना ठहरा सा” संग्रह की पहली कहानी है, कई सरोकारों को एक साथ सहेजा है लेखिका नें ने किन्तु किसी का किसी पर अतिक्रमण नहीं, कोई संशय नहीं यदि है तो बस एक माँ के अधूरे अरमानों को बेटी में साकार होते देखना, पिता की सोच जिसमें बेटा और बेटी में कोई फर्क नहीं है। बेटी की विवशता, संघर्ष और अपनी दृष्टि से सच व गलत को निर्धारित करना।
मन में गडी फांस की चुभन अंत तक महसूस होती है।
मायानगरी व रजतपट की चकाचौंध में सच का नाकारा जाना और फिर उसी को नियति माँ लेना। कहानी पिउरी ले के साथ गतिमान रहकर दुखांत पर विराम पाती है, बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर जाती है।
अगली कहानी “चित्रों की जुबान” यूँ तो एक रूहानी मोहब्बत की दास्ताँ है जिसमें जिस्म होकर भी नहीं रहा। सुजाता एक बीमारी की वजह से शरीर तिल तिल कर अपने ना होने की वजह बनने लगता है लेकिन नायक जतिन जिस्म की हदों के पार उसकी रूह को सींचना चाहता है। कई दफा आँखें भीग जाती हैं, उस विवशता भरे माहौल में जहाँ दोनों मजबूर हैं नियति के आगे, अंधेरों में रौशनी की किरण तलाशते हैं। लिव-इन रिलेशनशिप का अनोखा या आध्यात्मिक वर्जन कहानी में सहज स्वीकार्य लगता है तो यह लेखिका का सम्प्रेषण कौशल है।
अंत व्यथित कर गया किन्तु.... संतोष जी के शब्द उस समय गीली लकड़ी से सुलग भी रहे थे और संदल से महक भी रहे थे “ इतना प्यार देना था प्रभु तो ज़िंदगी से हरकतें क्यों छीन लीं। उठने के प्रयास में वह बिस्तर पर ढह गई....

जतिन ने उसे हुलसकर सीने से लगा लिया – मत कहो कुछ.... अपने चित्रों के जरिये सबकुछ तो कह डाला तुमने, दुनियाँ भर की अच्छाईयां, बुराईयाँ.... समाज के हर तबके का दर्द, ख़ुशी..... अब चुप भी रहोगी तो क्या फर्क पड़ेगा ।"

अगली कथा शीर्षक कथा है..."आसमानी आँखों का मौसम"। यह कथा स्त्री के मनोभावों का आईना है। किसी को चाहना, पा लेने की ललक फिर भी अपने प्यार का इज़हार न कर पाना। जब कह सकने की जमीन तैयार हुयी तब पुरुष के हिंसक रूप को भाँप अन्तर्मुखी हो जाना व रिश्तों पर से विश्वास उठ जाना। ज़िंदगी के बंटे हुए स्वरूप को परिभाषित करती सार्थक कहानी है यह भी।

"गूंगी" में बेज़ुबान का चरित्र जिया है महुआ ने किन्तु छोटी मालकिन वसुन्धरा की खामोशी को उजागर करता लगा है। अभावों में समझौता करती महुआ की लहूलुहान ज़िंदगी और विलासिता में रिश्तों के लिए छटपटाती वसुन्धरा में आखिर क्या अंतर है.... नारी जीवन के उतार-चढ़ावों की आदर्श प्रस्तुति है यह कथा। कसक दोनों ही जगह है, कहीं ज़ुबान न होने से कहीं ज़ुबान होकर भी चुप रहने से, छली तो जा रही है नारी ही।

अंकुश की बेटियाँ में लेखिका ने आज के परिवेश को अपनी कलम से बहुत प्रभावी तरीके से उकेरा है। धर्म व जाती के नाम पर शर्मसार होती इंसानियत की ख़ूबसूरत बानगी है यह कहानी।

'हलाहल' संकेतों के माध्यम से बहुत कुछ कहती सुन्दरतम रचना है। ज़हर तो विषधर के मुँह में होता है किन्तु वह मूंक प्राणी अपनी रक्षा के लिए उसका उपयोग करता है, असल जीवन में इंसान से जहरीला कोई जीव नहीं है।

"सब तरफ आग है लगी हुई" कश्मीरी पंडितों के मन की वेदना को उजागर करते हुए आतंकवाद के दूसरे पहलू को पूरी ईमानदारी से सामने ले आती है।

सेना के जवानों की तकलीफ़ों के साथ कर्तव्य निर्वहन की नज़ीर है यह कहानी।

आसन्नप्रसवा के लिए पति द्वारा कहा सम्वाद "इंसान से इंसान जन्म लेता है। औरत तब ब्रह्मा हो जाती है...... सृजन के सुख से भरी पूरी"....शायद पहली बार सुना है।

नागफनी के बीच, स्वदेश प्रेम व परदेश के आकर्षण के मध्य झूलते युवा डॉक्टर की हिचकिचाहट के साथ मातृभूमि के प्रति सोच की शानदार कहानी है।

'कठघरे से बाहर स्त्री हृदय की अबूझ भावनाओं का अनुपमेय सम्प्रेषण है। चाहे माँ हो, पत्नी हो या बेटी हो... नारी की सोच का पैमाना नहीं बदलता है कभी। संतोष जी ने इसी बात को स्पष्ट किया है इस कथा के माध्यम से।

मेरे होने का अर्थ, कहानी की सीमाओं को तोड़कर एक नारी के जीवन की सच्च्चाई बन गयी है। ऐसा लगता है मानों स्त्री का जन्म ही दुखों के लिए हुआ है। सारा जीवन किसी तपस्या से जीने के बाद एक स्त्री प्रशन करती महसूस होती है "मैं कौन हूँ"....... क्या मायनें हैं मेरे होने के.......

'जो खौफ़ आंधी से खाते तो' संग्रह की लम्बी कहानी है। शब्दों या प्रष्ट संक्या के माँ से नहीं, समयांतराल के लिहाज़ से भी। यहाँ भी स्त्री का समर्पण और पुरुष का लालच पूरी शिद्दत से महसूस किया जा सकता

है।
नारी की देह के आगे पुरुष जा भी पायेगा या नहीं.... अपाहिज होकर भी पौरुष व दम्भ उछाल मरता है, नारी जिसे नारायणी का दर्जा दिया है उसकी अदम्य इक्षाशक्ति व अंधेरों तथा निराशा के छ्णों में अडिग चट्टान की भांति हर प्रतिरोध सहन करने की वजह से जब ठान लेती है हर तूफ़ान से टकरा जाती है।
मृग-मरीचिका जीवन के असली मकसद की तरफ इशारा करती है। मोह-माया सिर्फ मारीचिका है, असली सुख ईश्वर में लीं हो जाना है।
महाकुम्भ कुछ अलग मूड की कहानी है जिसमें अलौकिक अवधारणा को सूत्रधार बनाया है संतोष जी नें। अध्यात्म व भारतीय डी.एन.ए.को सम्बद्ध करती रोचक कथा बन पड़ी है यह।
“आतिश-ए-संग” इस संग्रह की आखिरी प्रस्तुति है। यह मानवीय स्वभाव की हकीक़त को उजागर करती है। मनुष्य जिसको चाहता है उसके मन में उसे हासिल करने की इक्षा कभी भी समाप्त नहीं होती है। परिस्थितियाँ आवेग भले कम कर दें किन्तु जैसे ही उपयुक्त समय आता है, राख में दबी चिंगारी भड़क उठती है। कभी कभी बिल्ली के भाग्य से छींका भी टूट जाता है। इस कथा में विनय व सविता के माध्यम से यह बात बहुत प्रभावी तरीक़े से कही है लेखिका नें।
प्रणय का शाब्दिक निरूपण अत्यंत दुष्कर होता है। कोमल भावनाओं की प्रस्तुति में शब्द चयन से लेखकीय मर्यादा का ध्यान रखना होता है। यहाँ संतोष जी का अनुभव व कौशल दर्शनीय है। प्रथम तो कहानी का प्लाट ही माहौल को सापेक्षता देने के लिए उपयुक्त है, उस पर जलती-चटखती लकड़ियों से जो दृश्य निर्मित किया गया है वह अद्यितीय है। सांकेतिक रूप से लिखा गया दृश्य सजीव हो उठता है कहानी मैं।
पुस्तक का आकर्षक आवरण, त्रुटिरहित मुद्रण व स्तरीय सामग्री इसे पठनीय के साथ संग्रहणीय बनाती हैं जिसके लिए प्रकाशक **बधाई** के पात्र हैं।
इस अनमोल संग्रह हेतु संतोष जी को हृदयतल से **बधाई** व अशेष **शुभकामनाएँ** की उनकी सुलेखनी अनवरत साहित्य कोष को समृद्ध करती राहे व पाठकों की छुधा शांत होती रहे।
==0==

पुस्तक का नाम : आसमानी आँखों का मौसम
लेखिका : संतोष श्रीवास्तव
प्रकाशक : नमन प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2014
पृष्ठ संख्या : 207
मूल्य : रु. 350 /- मात्र
समीक्षक : मुकेश दुबे

मेरी नजर में "मालिश महापुराण "

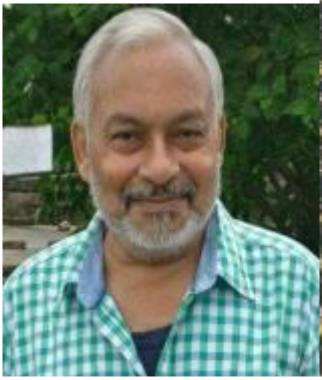

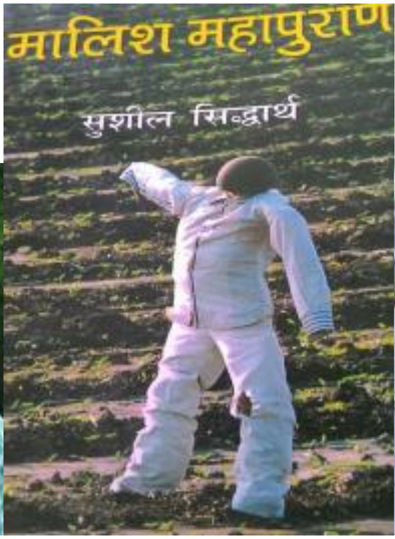

लेखक - डॉ.सुशील सिद्‌धार्थ **"मालिश महापुराण "** **समीक्षक : देवेन्द्र सोनी**

प्रारंभिक दौर में व्यंय्य को विधा के रूप में नही लिया जाता था किन्तु समय के साथ इसके बढ़ते प्रभाव के कारण अब इसे एक विधा के रूप में मान्य किया जाता है। कोई भी कथन, कहीं भी व्यंग्य उत्पन्न कर सकता है। सामान्य जन जो भी वार्तालाप करते हैं,अक्सर उसमें भी व्यंग्य का पुट दिखाई दे जाता है। कई बार यह हमारे हाव-भाव से भी प्रकट होता है । देखा जाए तो हमारे आसपास बिखरी हुई असमानता,उपेक्षा और दिखावटी क्रिया-कलापों में यह मौजूद होता है। यहां किए गए कटाक्ष , तीखे बोल - वचन या भाव - भंगिमा ही व्यंग्य कहलाते हैं । प्रभावित पक्ष इसे महसूस करता है और खींसे निपोरता या उग्रता धारण किए मिलता है। कुल मिलाकर - ताना मारना , चुटकी लेना , कमजोर मनोवृत्ति पर प्रहार करना या किसी बुराई को अलग लहजे में व्यक्त करना ही व्यंग्य है। मेरा मानना है कि सच्चा व्यंग्य सदैव ही परोक्ष होता है । प्रत्यक्ष में किया गया व्यंग्य - बिना मचान के शेर के शिकार करने जैसा होगा ।

व्यंग्य के ये सभी आवशयक तत्व डॉ. सुशील सिद्‌धार्थ के 47 व्यंग्य लेखों के संकलन " मालिश महापुराण " में आपको मिल जाएंगे। इन्हें पढ़ते हुए आपके अधरों पर मुस्कुराहट तो होगी ही पर कहीँ न कहीँ मन में उथल-पुथल भी मचेगी। कभी - कभी आपको ऐसा भी लगेगा जैसे कहीं हम ही तो नहीं हैं वह किरदार , जो दादा भाई के व्यंग्य में आया है । ऐसा इसलिए भी लग सकता है क्योंकि जब हम पढ़ रहे होते हैं तो हमारे अंदर के उमड़ते - घुमड़ते हर भाव पर उनकी पैनी नजर होती प्रतीत होती है।जिन पर उन्होंने अपनी बेबाक कलम चलाई है।

पात्र और स्थिति के अनुसार ही इन लेखों में स्वाभाविक शाब्दिक चयन भी हुआ है। ठेठ देहाती से

लेकर दोहा, मुहावरे और लोकोक्ति के अलावा अंग्रेजी के शब्द भी रोचक ढंग से आये हैं। " कुल मिलाकर " सहज, सरल और सुगम्य शब्दों में लिखा गया यह संकलन किताबघर प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है।

इस अद्भुत और रोचक संग्रह की यहां मैं समीक्षा नही कर रहा पर मेरा आग्रह है सुधी पाठकों से कि वे एक बार इसे पढ़ें अवश्य ।

आवरण के दूसरे पृष्ठ पर अंकित उनके व्यंग्य की एक बानगी देखिए -

" सच में उत्तर आधुनिकता नही यह दक्षिण आधुनिकता है । बहू को जलाने / मारने के बाद इसी मंदिर पर अखंड रामायण का आयोजन होता है। यहीं लड़कियां प्रार्थना करतीं हैं कि - हे प्रभु ! हमें सुरक्षित रखो। यहीं उसी प्रभु से अरदास होती है कि हमे बलात्कार के लिए लड़कियां दो । प्रभु सबकी सुनते हैं । "

सबको दिशा देता यह संग्रह पठनीय तो है ही, मार्गदर्शक भी है। आप भी पढ़िए ।

लेखक - डॉ.सुशील सिद्धार्थ

किताबघर प्रकाशन , दिल्ली ।

मूल्य - एक सौ पचास रुपए ।

समीक्षक : देवेन्द्र सोनी

प्रधान सम्पादक

युवा प्रवर्तक, इटारसी
09827624219

साक्षात्कार

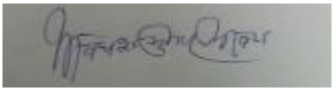

आदरणीय अवधेश जी, आज मुझे एक मंच " अंतरा शब्द शक्ति" के लिए किसी साहित्यकार का साक्षात्कार प्रस्तुत करना है। यह वो मंच है जिससे भारत के हजारों साहित्यिक प्रेमी , वाट्स अप और फेसबुक के जरिए जुड़े हैं। जब मुझे यह जिम्मेदारी दी गई तो मेरे ज़हन में सबसे पहले आपका ही नाम आया। मेरी हार्दिक इच्छा थी कि इस सेतुबंध के कार्य में , मैं अपना ऐसा योगदान दूं, जो मां सरस्वती के लिए मेरी पुष्पांजलि बन जाए...

आइए **अवधेश कुमार** "**अवध**" जी स्वागत है आपका
अवधेश जी: शुक्रिया पिंकी बहन।
पिंकी- मेरा सौभाग्य है अवध जी
पिंकी- जी सबसे पहले आप अपना संक्षिप्त परिचय साझा करें।
अवधेश जी-
परिचय
नाम : अवधेश कुमार
साहित्यिक नाम : 'अवध'
पिता का नाम : स्व० शिवकुमार सिंह
माता का नाम : श्रीमती अतरवासी देवी
स्थाई पता : मैढ़ी, चन्दौली, उत्तर प्रदेश
जन्मतिथि : पन्द्रह जनवरी सन् उन्नीस सौ चौहत्तर
आदर्श : संत कबीर, दिनकर व निराला
शिक्षा : स्नातकोत्तर (हिन्दी व अर्थशास्त्र), बी. एड., बी. टेक (सिविल), पत्रकारिता व इलेक्ट्रीकल डिप्लोमा
व्यवसाय : सिविल इंजीनियर, मेघालय में
अध्यक्ष (वाट्सएप्प ग्रुप): नूतन साहित्य कुंज, अवध - मगध साहित्य
प्रभारी : नारायणी साहि० अकादमी, मेघालय
सदस्य : पूर्वोत्तर हिन्दी साहित्य अकादमी
सदस्य : पूर्वासा हिन्दी अकादमी
नियमित लेखक : निष्ठा मासिक पत्र

संपादक : साहित्य धरोहर (संकलन)

शोध परक लेख : पूर्वोत्तर में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता

प्रकाशित साझा संग्रह : कवियों की मधुशाला, नूर ए ग़ज़ल

प्रकाशनाधीन साझा संग्रह : मधुबन, सखी साहित्य

सम्मान : विभिन्न साहित्य संस्थानों द्वारा प्राप्त

प्रकाशन : विविध पत्र - पत्रिकाओं में अनवरत जारी

सृजन विधा : गद्य व काव्य की प्रचलित विधायें

उद्देश्य : हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति जन मानस में अनुराग जगाना

संपर्क : awadhesh.gvil@gmail.com, 9862744237,7282837029

*‌**पिंकी*** - जी अवधेश जी शुक्रिया। उत्तरप्रदेश से मेघालय के सफर के बारे में थोड़ी जानकारी दीजिए महोदय।

*‌**अवधेश जी***- बहन बस यूं ही समझ लो कि दाना पानी यहां का ही लिखा था जीवन में सो यहां मेघालय की सुंदर घाटियों में पहुंच गया।

*‌**पिंकी***- आदरणीय अवधेश जी आप कोई ऐसा किस्सा बताइये जिससे आपको लिखने की प्रेरणा मिली। और आपके प्रेरणा स्रोत कौन कौन हैं?

*‌**अवधेश जी***- बचपन से ही हिंदी विषय प्रिय था लेकिन पिताजी के कहने पर इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, लिखने का क्रम बचपन से ही जारी है , अभी भी नौकरी सिविल इंजीनियरिंग की ही करता हूं आजीविका के लिए , साहित्य से तो प्रेम करता हूं।

साहित्य में रुचि बचपन से ही है | गाँव में होने वाले नाटकों से मन साहित्य की ओर आकर्षित हुआ था | पाँचवीं कक्षा में कुछ टूटा - फूटा लिखने लगा था जो आज तक उतार - चढ़ाव के साथ जारी है | कहा भी गया है कि साहित्य, संगीत और कला विहीन व्यक्ति पशु के समान होता है | कबीर के दोहे, दिनकर की रश्मिरथी और प्रेमचंद की कहानियाँ असीम प्रेरणाशक्ति के स्रोत हैं | मुझे याद है कि जब मैं कक्षा तीन में पढ़ता था तो रश्मिरथी खंडकाव्य कंठस्थ था ....कबीर के बहुत से दोहे जुबान पर थे |

*‌**पिंकी***- साहित्य सृजन के अलावा आपके और क्या क्या शौक हैं?

*‌**अवधेश जी***- बहन बागवानी और भ्रमण का शौक रखता हूं।सत्य बोलना, सत्य सुनना और हृदय की आवाज को शब्द देना रुचि ही नहीं अपितु साधना भी है | यथा सम्भव मदद करना और किसी का बुरा न चाहना ही पूजा है ।

*‌**पिंकी***- साहित्य में आप अपने आप को कहाँ पाते हैं?

*‌**अवध जी***- साहित्य अथाह सागर और असीम आकाश है | मैं एक अदना सा कलमकार सूर्य के समक्ष जुगनू सा टिमटिमा रहा हूँ और इसके पीछे भी आप लोगों का स्नेह और आशीष है जो हर पल मुझे सम्बल देता है |

नूतन साहित्य कुंज, अवध मगध साहित्य, पूर्वोत्तर हिन्दी साहित्य अकादमी, नारायणी साहित्य

अकादमी और पूर्वासा हिन्दी अकादमी आदि मंचों से जुड़ा हुआ हूं | अहिन्दी भाषियों को हिन्दी की मुख्य धारा में लाने में बहुत हद तक सफल भी हुआ हूँ और इस पुनीत प्रयास में आगे बढ़ने की प्रबल सम्भावना भी है |

पिंकी - लेखन के बारे में कुछ बतायें |

अवध जी- जी अवश्य | मैं नियमित रूप से निष्ठा मासिक पत्र में लेखक होने के साथ कई साहित्य संकलनों का संपादन भी कर चुका हूँ | शोधपरक लेख "पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी की बढ़ती लोकप्रियता" से काफी मान सम्मान मिला है, "श्रद्धार्घ" और "अमर्त्य" काव्य पुस्तकों की समीक्षा करने के साथ ही कई साझा संकलन प्रकाशित एवं प्रकाशनाधीन हैं | विविध पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशन अनवरत जारी है |

पिंकी- आपकी नज़र में साहित्य कैसा होना चाहिए !

अवध जी - बहुत उत्तम सवाल | समन्वय और लोक कल्याण की भावना से ओत - प्रोत सृजन को ही साहित्य मानना चाहिए, शब्दों का चमत्कार मात्र, साहित्य नहीं हो सकता -

तमस रात्रि को भेदकर, उगता है आदित्य |
सहित भाव से जो भरा, वही सत्य साहित्य ||

पिंकी- आपकी अपनी कोई यादगार रचना बताइये जो आपको गुनगुनाने पर विवश करती हो ?

अवध जी- किसी रचनाकार के लिए उसकी सारी रचनायें अनमोल होती हैं | "अवधपति ! आ जाओ इक बार" १०८ भाग एवं "अवध सभी को रहा जगाय" १०० भाग बहुत रुचिकर हैं |

पिंकी- आप साहित्य क्षेत्र में मित्रों और निजी जीवन के मित्रों को कुछ कहना चाहते हैं क्या?

अवध जी- साहित्य की महान विभूतियों को प्रणाम, साथियों को नमस्कार एवं नवांगतुकों को हार्दिक स्नेह | साहित्य साधना में जाने - अनजाने समयाभाव के कारण अपनों की उपेक्षा अवश्य हुई होगी जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ |

पिंकी - आदरणीय मैं मंच की ओर से आपको बहुत बहुत धन्यवाद देती हूं, अपना अमूल्य समय देने के लिए, आखिर में आपसे निवेदन करती हूं कि "अंतरा शब्द शक्ति" मंच के लिए अपने मुख से दो शब्द संदेश के रूप में प्रेषित करें।

अवधेश जी - सभी सम्मानित सदस्यों को हृदय तल से **शुभकामनाएं** प्रेषित करता हूं, भगवान करे ये ग्रुप साहित्य के क्षेत्र में न ए आयाम स्थापित करे । मैं हमेशा सहयोग के लिए उपस्थित हूं । नमस्ते। जय मां शारदे🙏🏻

****

तो ये था पूर्वांचल के साहित्य सिपाही, प्रहरी **श्री अवधेश कुमार** "**अवध** "जी का साक्षात्कार , उनके जीवन के कुछ पहलुओं को पढ़कर आप सभी आनंदित हुए होंगे। मुझे इस प्रक्रिया में शामिल करने के लिए मंच का धन्यवाद, मंच को प्रणाम🙏🏻 साक्षात्कार के सत्यापन हेतु आदरणीय अवध कुमार अवधेश जी के हस्ताक्षर संलग्न हैं।

* ***प्रस्तुतकर्ता*** - **पिंकी परुथी "अनामिका"**

बारां (राजस्थान) ,325205

बाल कविता

आओ साथी

आओ साथी ध्वज फहरायें
सब मिलकर जन गण मन गाएँ।
हम सब एक माला के मोती -
जन जन को संदेश सुनाएँ।

एक-एक ग्यारह बन जाएँ
निर्बल का संबल बन जाएँ।
दीन जनों के राम बनें हम-
दुखियों के रहीम बन जाएँ।

छुआछूत का भूत भगाएँ,
ऊँच नीच का भेद मिटाएँ।
जाति पाँति के तोड़े बंधन -
देश-प्रेम में हम बंध जाएँ।

हम चाहे किसान बन जाएँ,
सीमा पर जवान बन जाएँ।
बनें चिकित्सक या अध्यापक -
अपना कार्य न हम बिसरायें।

वैसे हम बच्चे कहलाए,
बड़ी बात हम न कर पाएँ।
प्रथम और अंतिम अभिलाषा,
भारत के सपूत कहलाएँ।

बिजली

बिजली कितने काम की बिजली
केवल नहीं नाम की बिजली।
बिजली बिना काम रुक जाते-
कस्बा शहर गाँव की बिजली।

बिजली - बिजलीघर से आती
लेकिन नजर नहीं यह आती।
खंभों पर पतले तारों पर-
घर-घर दौड़ लगाती बिजली।

टी. व्ही, फ्रीज, पंखे व कूलर
बड़ी मशीने कपड़े की मिल
भारी रेलगाड़ियों को भी -
पटरी पर दौड़ती बिजली।

खुद समझें सबको समझाएँ
आवश्यक हो तभी जलाएँ
उज्ज्वल हो आने वाला कल
आओ आज बचाये बिजली।

राजेन्द्र श्रीवास्तव

बाल कविता

प्यार के पंछी

नन्हें - नन्हें प्यार के पंछी
लगते सबसे न्यारे पंछी |

फुदक - फुदक कर आते पंछी
जरा सी खटपट, फुर्र से उढ़ जाते पंछी |

चीं - चीं, चूं - चूं करते रहते पंछी
कभी पेड़ पर, कभी गगन में, एक जगह नहीं
रहते पंछी |

छत पर दाना डालो, झट से आ जाते पंछी
डरते - डरते दाना चुंगते पंछी |

कुदरत के प्यारे - न्यारे पंछी
लाल - हरे, नीले - पीले बडे दुलारे पंछी |

नन्हें - नन्हें प्यार के पंछी
मानवी विकास की भेंट चढ़ रहे पंछी ||

गरम समोसा - गरम जलेबी

पापा - पापा मोटूराम हलवाई की
दुकान पर हमको ले जाओ
गरम समोसा-गरम जलेबी हमें खिलाओ ||

पापा - पापा देखो - देखो
गोल - मटोल कितने सुघड़ समोसे
लच्छेदार रसभरी जलेबी लाल - लाल ||

पापा - पापा हमें दिलाओ,
मत कोरी बातों से हमको बहकाओ |
चलो - चलो पेटभर खाओ और खिलाओ ||

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
फतेहाबाद-आगरा

~अंतरा - शब्दशक्ति ~ सम्मान-2018 प्रस्तावित है

शीघ्र प्रकाश्य साझा संग्रह

1. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
दोहा श्रृंखला एवं मुक्तक मणि (संयुक्त साझा संग्रह)

2. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
गीत-नवगीत (साझा संग्रह)

3. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
ग़ज़ल (साझा संग्रह)

4. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
लघुकथाएं एवं लघु कथाएं (साझा संग्रह)

5. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
विचार मंथन (साझा संग्रह)

6. ~अंतरा - शब्दशक्ति ~
नई कविता भाग-1 (साझा संग्रह)

7.~अंतरा - शब्दशक्ति ~
नई कविता भाग-2 (साझा संग्रह)

संपादक मंडल

प्रीति समकित सुराना
मनोज जैन 'मधुर'
ब्रजेश शर्मा 'विफल'

~|| अंतरा-शब्दशक्ति ||~

मासिक वेब पत्रिका